अल्लाह

और

उसके रसूल की पहचान

अनुवाद

अब्दुस्समी मो. हारून

संशोधन

मो. ताहिर हनीफ़

मकतबा अलफहीम
मऊनाथ भंजन-उ.प्र.

معرفة اللّٰه ورسوله

(باللغة الهندية)

अल्लाह और उसके रसूल की पहचान

पुस्तक का नाम : अल्लाह और उसके रसूल की पहचान

अनुवाद : अब्दुस्समी मो० हारून

संशोधन : मो० ताहिर हनीफ

प्रकाशन वर्ष : 2012

मूल्य : 50/-

प्रकाशक : मकतबा अलफहीम मऊ

MAKTABA AL-FAHEEM
Raihan Market, 1st Floor, Dhobia Imli Road
Sadar Chowk, Maunath Bhanjan - (U.P.) 275101
Ph.: (O) 0547-2222013, Mob. 9236761926, 9889123129, 9336010224
Email: faheembooks@gmail.com
WWW.faheembooks.com

معرفة الله ورسوله

अल्लाह और उसके रसूल की पहचान

संकलन:

रिसर्च डिवीज़न दारूस्सलाम

अनुवाद:

अब्दुस्समी मो. हारून

संशोधन:

मो. ताहिर हनीफ़

MAKTABA AL-FAHEEM

Raihan Market, 1st Floor, Dhobia Imli Road

Sadar Chowk, Maunath Bhanjan - (U.P.) 275101

Ph.: (O) 0547-2222013, Mob. 9236761926, 9889123129, 9336010224

Email: faheembooks@gmail.com

WWW.faheembooks.com

अल्लाह कौन है?

अल्लाह ख़ास नाम है जो एक सच्चे पाक माबूद (पूज्य) के लिए विशेष है जिसका अस्तित्व आप खुद अनिवार्य रूप से है, जिस के अत्यन्त सुन्दर नाम उसकी पवित्र विशेषताओं (फ़ज़ीलतों) की व्याख्या करते हैं। अल्लाह तआला कहता है:

"अल्लाह वही है जिसके अलावा कोई भी वास्तव में इबादत के लायक़ नहीं है, वही राजा है, पाक है, एक मात्र जो सभी ख़राबियों से मुक्त है, सुरक्षा प्रदान करने वाला है, अपने पैदा किये जीव-जन्तुओं की रक्षा करने वाला है, सर्वशक्तिमान है, प्रभावशाली है, सर्वोच्च है। अल्लाह पवित्र है। (वह उच्च है) उन सभी से जिन को वे लोग उसका साझी समझते हैं। अल्लाह वही है, (सबको) पैदा करने वाला, सभी वस्तुओं का

आविष्कारक, रूप बनाने वाला। उन्हीं से सम्बन्धित हैं सभी सब से अच्छे नाम। वह सभी जो आकाशों में और धरती पर हैं सभी उनका गुणगान करते हैं। और वही सब से अधिक ताक़त वाला है, सब से बुद्धिमान है।'' (सूरह अल-हश्र : ५९:२३,४)

अल्लाह एक और मात्र एक है, न दिखाई देने वाला है, और बेमिसाल अनोखा है। उसे न तो पुत्र है न ही साझी है और न ही कोई उसके समान है। वह एक मात्र अकेला दुनिया का पैदा करने वाला और रोज़ी देने वाला है। किसी से उसकी समानता नहीं हो सकती है। वह किसी चीज़ में घिरा नहीं है न ही कोई चीज़ उस में घिरी है। "कोई भी चीज़ उस के जैसी नहीं।''

अल्लाह तआला कहता है:

"कहिए {ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)} अल्लाह वही है जो एक है। अल्लाह ऐसा मालिक है जो स्वयं पर्याप्त है, जिसकी आवश्यकता सभी जीवों को है, (वह न तो खाता है न पीता है) न तो उसने किसी को जना है और न ही वह जना गया। और कोई भी उसके समान नहीं है। (सूरह अल-इख़्लास : ११२:१-४)

वही पैदा करने वाला है जिसके हाथः में सभी काम का प्रबन्ध करना है, अल्लाह सर्वशक्तिमान और सब कुछ जानने वाला है। अल्लाह तआला कहता है:

"आकाशों और पाताल की उत्पत्ति करने वाला वही है। जब वह किसी कार्य के होने का निर्णय लेता है तो वह कहता है: हो जा- और हो जाता है'' (सूरह बक़रा : ११७)

कोई नहीं है जो उसके आदेश को रोक सके अथवा उसके निर्णय को परिवर्तित कर दे। वह ऐसा मेहरबान है जिसकी मेहरबानी सभी वस्तुओं पर है।

पैग़म्बर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम बताते हैं,

"अल्लाह तू सभी दयावानों से बढ़कर दया करने वाला है'' (सूरह अल-आराफ़ : ७:१५१)

अल्लाह तआला कहता है:

"मेरी दया सबको घेरे है'' (सूरह अल-आराफ़ : ७:१५६)

वह अपने सभी कामों में बिलकुल ठीक एवं बुद्धिमान है। उसका न्याय दुनिया में हर जगह है जहां कोई उसके आदेश से बाहर नहीं है।

अल्लाह तआला कहता है:

"अल्लाह साक्षी (गवाह) है कि कोई भी वास्तव में इबादत के लायक़ नहीं है केवल वही। और फ़रिश्ते और वे जिन को ज्ञान दिया गया (भी इसके साक्षी हैं) । (वह सदैव ही) अपने पैदा किए (जीव जन्तु आदि) में न्याय क़ायम रखता है। उसके अतिरिक्त वास्तव में कोई भी इबादत के लायक़ नहीं है, वह

सब से अधिक ताक़त वाला, सबसे अधिक अक़्लमंद है।''
(सूरह आले-इमरान : ३:१८)

कोई उसकी हुकूमत में साझीदार नहीं, न ही उसे किसी सहयोगी अथवा पक्ष लेने वाले की आवश्यकता है कि वह अपने लिए पुत्र रखे।

वह सातों आकाश से ऊपर है अपने सिंहासन पर इस प्रकार है जो उसकी महानता के योग्य है। अल्लाह का फ़रमान होता है:

"वास्तव में तुम्हारा मालिक अल्लाह ही है, जिस ने आकाशों और पाताल को छ: दिनों में पैदा किया, और फिर वह अपने सिंहासन पर उठा (इस्तवा हुआ) (ठीक उसी रूप में जो उसकी महानता के योग्य है) वह रात्रि को दिन के ढांकने हेतु लाता है कि जल्द उसके पीछे लगा आता है, और उसने सूरज, चाँद और तारों को पैदा किया। सब उसके आदेश से दबे हुए हैं। वास्तव में पैदा करना और आदेश देना उसी के हाथ में है। बरकत वाला है अल्लाह जो सारे आलम (मानव, जिन्न और वह सभी जिसका अस्तित्व है) का मालिक है'' (सूरह अल-आराफ़ : ७:५४)

"वह ग़लतियों को माफ़ करने वाला है, अत्यन्त प्रेम वाला है (उन से जो परहेज़गार हैं कि वह वास्तव में इस्लामी तौहीद पर विश्वास करने वाले हैं), वह सिंहासन का मालिक है, महान है, (वही) करने वाला है जो कुछ वह इच्छा करता है''। (सूरह अल-बुरूज : ८५:१४-१६)

अल्लाह ने अपनी आख़िरी किताब, कुरआन, अपने अंतिम संदेष्टा (रसूल) हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर उतारा, जिनकी जिम्मेदारी थी कि वह इसलाम का संदेश मानव तक पहुंचा दें। अल्लाह का फ़रमान होता है:

"कहिए (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) : ऐ लोगों! वास्तव में मैं तुम लोगों की ओर अल्लाह के संदेष्टा के रूप में भेजा गया हूं, उसी (अल्लाह) के लिए आकाशों एवं पाताल का राजपाट है। उसके अतिरिक्त वास्तव में कोई इबादत के लायक़ नहीं है। वही है जो जीवन एवं मृत्यु देता है। अतः अल्लाह और उसके संदेष्टा (हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर विश्वास करो, वह संदेष्टा जो न तो पढ़ सकते हैं न ही लिख सकते हैं (अर्थात हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम), जो अल्लाह और उसके शब्दों (इस कुरआन पर) तौरैत और इंजील पर और अल्लाह के शब्द "हो जा" पर और वह ईसा (मसीह) मरयम के पुत्र थे) पर विश्वास रखते हैं। और उन्हीं की पैरवी करो ताकि तुम सही रास्ता पाओ" (सूरह अल-आराफ़ : ७:१५८)

वही अल्लाह है। सभी पाकी उसी के लिए है। वह सभी प्रकार के दोषों से बहुत दूर है। अल्लाह कहता है:

"अल्लाह! लाइलाहा इल्ला हुव (उसके सिवा वास्तव में कोई इबादत के लायक़ नहीं है), अल हैय्युल क़य्यूम (हमेशा ज़िन्दा रहने वाला, एक मात्र उस सभी का जिसका वजूद है उनको

रोज़ी देने वाला और रक्षा करने वाला है) न ही वह औंघता है और न उसे नींद आ सकती है। जो कुछ भी आकाशों एवं पातालों में है सब उसी का है। कौन है जो उस के पास सिफ़ारिश करे अतिरिक्त उसके जिसे वह अनुमति दे? वह जानता है कि इस सृष्टि संसार में उन्हें (उसके जीवों जन्तुओं और सभी वस्तुओं) को क्या होता है और इस संसार के बाद उनके साथ क्या होगा। और वो लोग उसके इल्म (ज्ञान) से कुछ नहीं पाते अतिरिक्त इसके जो वह चाहे। उसकी कुर्सी आकाशों और पाताल को घेरे है, और उसे इस की देख-रेख और रखवाली भारी नहीं लगती है। वह सब से बुलन्द है सब से महान है'' (सूरह अल-बकरा : २,२५५)

अल्लाह ही मालिक है, सबका पैदा करने वाला है ख़ुदमुख़्तार और सब चीज़ों का इंतज़ाम करने वाला है। वही सत्य अल्लाह है और दूसरे सभी देवी-देवता झूठे हैं। वह एक और अनोखा है। उसकी पवित्रता में, उसके अल्लाह होने में, उसकी अच्छाई में, उसके नामों में और उसके औसाफ़ में कोई उसका साझी नहीं है। अल्लाह कहता है:

"ज़मीन व आसमान का, और उन सभी का जो इन दोनों के बीच है, सभी का वही मालिक है, अत: (केवल एक) उसी की इबादत करो और उसकी पूजा में मज़बूत और जमे रहो। क्या तुम जानते हो किसी को जो उसके समान हो? (वास्तव में

उसके समान या तुलना योग्य है ही नहीं और उसका कोई साझी नहीं है)। {उनके जैसा कोई नहीं है और वही सब की सुनने वाला और सबको देखने वाला है}। (सूरह मरयम : १९:६५)

अल्लाह सदैव रहने वाला है, स्वयं जीने वाला है, सब को जीविका देने वाला है। वह सब कुछ जानने वाला है जिसका ज्ञान सभी वस्तुओं को अत्यन्त पूर्ण ढंग से घेरे है, चाहे वह छिपा हो अथवा खुला हो, छोटा हो या बड़ा हो:

"और तुम अपनी बात को गुप्त रखो अथवा स्पष्ट करो, हक़ीक़त में वह सभी कुछ जानता है जो (मनुष्य के) सीनों में है। क्या वह न जाने जिसने पैदा किया? वह सब से दयावान और (अपने बन्दों के लिए) नर्म है, (सभी चीज़ों के बारे में) सब कुछ जानता है'' (सूरह अल-मुल्क : ६७:१३,१४)

कोई भी उसके ज्ञान से ग़ायब नहीं है, न ही उस से छिपा है चाहे वह सब से छोटी चींटी का वज़न ही क्यों न हो (१०:१६) वह चाहे आराम करता हो अथवा हरकत में हो, सभी चीज़ों की हालत की जानकारी आरम्भ से उसके होने तक उसको है। "वह न तो बेख़बर है और न ही भूलता है'' (सूरह ताहा : २०:५२)

अल्लाह बहुत अधिक मेहरबान और दयावान है जिसकी दया सभी वस्तुओं को घेरे है। वह अन्याय एवं अत्याचार से दूर है।

"और तुम्हारा मालिक किसी के साथ भी अन्याय नहीं करेगा'' (सूरह अल-कहफ़ : १८:४९)

"बेशक अल्लाह मानव के साथ कुछ भी जुल्म नहीं करता है, परन्तु मानव स्वयं अपने साथ जुल्म करते हैं।'' (सूरह यूनुस : १०:४४)

कोई ऐसी चीज़ नहीं है जो उसकी शक्ति या योग्यता को समाप्त करे; यदि वह कुछ चाहता है तो बस कह देता है "हो जा'' और वह हो जाता है।

"आकाशों और पाताल में कोई नहीं जो अल्लाह को नाकाम करे, वह सब जानने वाला, सारी शक्ति वाला है'' (सूरह फ़ातिर : ३५:४४)

आकाशों और पाताल की सुरक्षा उसके लिए बोझ नहीं है।

"उसकी कुर्सी आकाश पाताल सबको घेरे है और उसे उनकी सुरक्षा और देख-रेख भारी नहीं लगती क्योंकि वह सब से बुलन्द और सर्वोच्च है'' (सूरह अल-बकरा : २:२५५)

वह ज़िन्दा एवं सदा रहने वाला है, न उसे औंघ आती है और न ही उसको नींद आ सकती है। आकाश पाताल सब पर उसी का शासन है।

"वह जो चाहे पैदा करता है। जिसे चाहे वह बेटी देता है और जिसे चाहे बेटा देता है या (किसी को) दोनों (बेटा-बेटी) दे

और जिस किसी को चाहे बांझ बना दे। निःसंदेह वह जानने वाला, शक्तिशाली है'' (सूरह अश-शूरा : ४२:४९,५०)

वह दिखाई देने वाला एवं न दिखाई देने वाला सभी के बारे में जानने वाला है।

कोई भी जीव ऐसा नहीं है जो धरती पर चलता है परन्तु उसकी जीविका अल्लाह पर निर्भर है। वह उसके रहने-सहने के स्थान को जानता है:

"उसी को मात्र (क़यामत की) घड़ी की जानकारी है, वर्षा नीचे भेजता है और (माँ के) पेट में क्या है वही जानता है। कोई आत्मा नहीं जानती कि वह कल क्या कमाएगी, और न ही कोई आत्मा जानती है कि वह किस धरती पर मरेगी। निःसंदेह अल्लाह सब जानने वाला, सब की ख़बर रखने वाला है।'' (सूरह लुकमान : ३१:३४)

उसकी बातें सूचना देने में सब से सत्य हैं, वह शासन करने में सबसे लायक़ है और बात विचार में सबसे स्वच्छ है:

"और तेरे मालिक की बात सच्चाई और इंसाफ़ में पूरी है'' (सूरह अल-अंआम : ६:११५)

जिन सब को उसने पैदा किया उन सभी से वह अपने व्यक्तित्व एवं अपने औसाफ़ में सब से बुलन्द और परे है क्योंकि वह स्वयं अपने संबन्ध में कहता है:

"वह सर्वोच्च और महान है'' (सूरह अल-बकरा : २:२२०)

"वह अपने बन्दों पर सर्वोच्च है, वह बुद्धिमान है, सब चीज़ की खबर रखने वाला है'' (सूरह अल-अंआम : ६, १८)

उसकी निशानियां हर जगह हैं और वह कुरआन की कई आयतों (श्लोकों) में हमारी नज़र को आकर्षित करता है कि हम उन में ध्यान दें और उसके मालिक होने को समझें और इस प्रकार उसकी इबादत की ओर मुड़ें:

"और उनकी निशानियों में से (ही) है कि उसने तुम (आदम) को मिट्टी से पैदा किया, और फिर {हौव्वा को आदम की पसली की हड्डी से, और फिर उसके वंश को वीर्य से और}- देखो फिर जभी तुम मानव फैले! और उसकी निशानियों में से (यह भी) है कि तुम्हारी पत्नियों को तुम्ही से पैदा किया, ताकि तुम उन से आराम शांति पाओ, और उसने तुम दोनों के बीच प्रेम और प्यार भर दिया। नि:संदेह इस में उन लोगों के लिए निशानी है जो ध्यान और चिन्तन-मनन करते हैं। और उनकी निशानियों में से आकाश पाताल, का जन्म और तुम्हारी भांति-भांति की बोलियां और रंगें हैं। नि:संदेह इन में उन के लिए जो जानकार हैं निशानियां हैं। और उनकी निशानियों में तुम्हारा रात और दिन में सोना, और उसकी कृपा की खोज (भी) है। उसमें उन लोगों के लिए निशानी है जो लोग ध्यान से सुनते हैं। और उनकी निशानियों में से है कि वह तुम को

चमक दिखाता है, भय और आशा के लिए, और वही है जो (वर्षा के) पानी को आकाश से भेजता है और उस से धरती को उसकी मृत्यु के पश्चात जीवित करता है। निःसंदेह इस में उन लोगों के लिए निशानी है जो समझते हैं। और उसकी निशानियों में से है कि आकाश एवं पाताल उसके आदेश से खड़े हैं। फिर उसके बाद वह तुम को एक बार पुकारेगा, तब, तुम धरती से निकल पड़ोगे (यानी अपनी कब्रों से हिसाब-किताब के लिए निकलोगे) और जो कुछ भी आकाश पाताल में है सब उसी का है। सभी उसके आज्ञाकारी हैं (सूरह अल रूम, ३०:२०-२६)

"उसने आकाशों को बनाया बिना किसी खंभे के जिन्हें तुम देखते हो, और धरती पर शक्तिशाली पहाड़ गाड़ दिये ताकि तुम्हें लेकर न हिलाए। और उसने इस में हर प्रकार के जीव-प्राणी को फैलाया। और हमने पानी (वर्षा) आकाश से उतारा और हम ने उस में हर प्रकार के सुन्दर जोड़े उगाए। यह अल्लाह का बनाया हुआ है। अतः मुझे दिखाओ वह जो उसके सिवा औरों ने (जिनकी तुम पूजा करते हो) बनाया हो। नहीं (बल्कि), ज़ालिमीन (मुश्रिक और ग़लत कार्य करने वाले और वह जो अल्लाह के होने में विश्वास नहीं रखते) खुली भूल और ग़लती में हैं।" (सूरह लुक़मान : ३१: १०, ११)

"निःसंदेह अल्लाह अनाज के दानें और फलों की गुठली को (जैस खजूर की गुठली) अंकुरित करने वाला है। वह जीवित

को मुर्दे से और मुर्दे को जीवित से निकालता है। वह है अल्लाह, फिर तुम कहां सच्चाई से बहके जाते हो? (वही है जो) अंधकार को चीर कर सुबह निकालने वाला है। उस ने रात्रि आराम के लिए बनाया, और सूर्य और चाँद को हिसाब व गणना का अनुमान लगाने के लिए बनाया। यह अल्लाह सब से ताक़तवर, सब कुछ जानने वाले की ठहराई बात है। और वही है जिस ने तुम्हारे लिए तारे बनाए, ताकि तुम धरती और समुद्र के अंधेरे में रास्ता पाओ। हम ने (वास्तव में) अपनी आयात (प्रमाणों, गवाहियों, श्लोकों, पाठों, निशानियों, आलोकों आदि) को फ़ैला कर बतला दिया उन लोगों के लिए जो ज्ञानी हैं। वही है जिसने तुम को एक व्यक्ति (आदम) से पैदा किया और तुम को एक स्थान रहने के लिए दिया (धरती पर अपनी माँ के पेट में) और एक स्थान जमा रहने के लिए {धरती पर (अपनी कब्रों में) अथवा अपने पिता के पुश्त में}। हम ने अपने आलोकों (कुरआन) को फ़ैला कर बतला दिया है उन लोगों के वास्ते जो समझते हैं। वही है जो आकाश से (वर्षा के) पानी उतारता है और हमने उस से सभी प्रकार के वनास्पति जीवन पैदा किये फिर हम ने उस से सब्ज़ी निकाली जिस से गुच्छे लगे दाने निकालते हैं और खजूर के गाभे से पास-पास गुच्छे और अंगूर के बाग़ और ज़ैतून और अनार किसी बात में मिलते और सिकी बात में अलग, उसका फल देखो जब फले और उसका पकना। बेशक इनमें निशानियां है

उन लोगों के लिए जो विश्वास रखते हैं''। (अल-अनआम ६:९५-९९)

उसके समान कोई नहीं है क्योंकि उसकी विशेषतायें पूर्ण हैं। वह किसी के साथ अन्याय नहीं करता है क्योंकि उसकी खूबियाँ पूर्ण है।

वह अपने सभी बन्दों के कामों के बारे में, अपनी मुकम्मल जानकारी एवं ज्ञान के कारण जानकार हैं:

"वह सब कुछ जानता है जो खुला है और छुपा है''। (सूरह अल-आला : ८७:७)

"नहीं तुम (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) कोई कार्य करते हो और न ही कुरआन का कोई भाग तुम पढ़ते हो, न ही (ऐ मानव!) तुम कोई कार्य (अच्छा या बुरा) करते हो, परन्तु हम तुम पर वहाँ गवाह होते हैं, जब उसको करते हो। और तुम्हारे मालिक से कुछ भी छिपा नहीं है (चाहे) एक तिनका का वज़न हो (या किसी छोटी सी चींटी का) धरती पर या आकाश में। न ही उस से छोटी और न ही उस से बड़ी कोई चीज़ नहीं है परन्तु वह (लिखित है) एक स्पष्ट रिकार्ड में'' (सूरह यूनुस : १०:६१)

"उसी के पास ग़ैब (वह सभी चीज़ें जो छिपी हैं) की कुंजियां हैं, उसके सिवा कोई नहीं जानता है। और वही जानता है जो कुछ थल में है और जल में है, और न ही कोई पत्ता गिरता है परन्तु वह उसे जानता है। धरती के अंधकार में कोई दाना

नहीं, न ही कोई चीज़ ताज़ा और सूखा है, परन्तु वह एक स्पष्ट रिकार्ड में लिखित है'' (सूरह अल-अंआम, ६:५९)

"अल्लाह जानता है जो कुछ किसी मादा के पेट में है और पेट में जो कुछ घटते और बढ़ते हैं और हर चीज़ उसके पास एक अनुमान से है। हर छिपी और खुली चीज़ों का सब कुछ जानने वाला है, वह सब से बड़ा, सबसे महान है। बराबर हैं जो तुम में बात आहिस्ता कहे और जो अवाज़ से कहे, और जो रात में छिपा है और जो दिन में राह चलता है'' (सूरह अल-राद : १३:८-१०)

पाक पैग़ाम के स्रोतः

सभी पाक मज़हबी किताबों का माध्यम या स्रोत एक ही है। अल्लाह कहता है:

"वही है जिस ने तुम पर (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) इस पुस्तक (कुरआन) को सत्यता के साथ उतारा जो उस से पहले (की पुस्तकों) की पुष्टि करता है। उस ने इस से पहले तौरात और इंजील को, लोगों को रास्ता दिखलाने के लिए उतारा। और उसी ने कसौटी {ग़लत और सही के बीच इंसाफ़ करने वाला (कुरआन)} को उतारा। वास्तव में जो लोग अल्लाह की आयात (प्रमाणों, गवाहियों, श्लोकों, पाठों, निशानियों और आलोकों आदि) में विश्वास नहीं रखते, उनके लिए कठोर सज़ा है; और अल्लाह सबसे ताक़तवर है, बदला लेने में मुकम्मल योग्य है।'' (सूरह आले-इमरान : ३:३,४)

अल्लाह ने उन्हें एक मात्र मक़सद के लिए उतारा और वह यह है कि वह मानव को सीधे मार्ग की ओर ले जाए जो इस दुनिया में भी और इस के बाद आने वाली दुनिया में भी उन्हें, उसकी एकता में विश्वास और अपने सभी इबादत के काम उसी के लिए समर्पित करने के फलस्वरूप, खुशहाली प्रदान करेगा। अल्लाह कहता है:

"वास्तव में यह कुरआन वह मार्ग दिखता है जो सब से सीधा और सत्य है और (एक अल्लाह और उसके संदेष्टा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर विश्वास रखने वालों को, जो अच्छे कार्य करते हैं, खुशख़बरी सुनाता है कि उन्हें एक महान पुरस्कार (जन्नत) मिलेगा'' (सूरह अल-इसरा - १७:९)

"रमज़ान का महीना जिस में हम ने यह कुरआन उतारा, मानव के लिए एक रास्ता दिखाने वाला, और रास्ता दिखलाने के लिए स्पष्ट प्रमाण और (गलत और सही के बीच की) कसौटी है'' (सूरह अल-बकरा : २:१८५)

सभी संदेष्टा अपने ही लोगों में भेजे गये थे परन्तु मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सभी मानव की ओर भेजे गये थे।

कुरआन क्या है?

कुरआन अल्लाह का शब्द है, न कोई पैदा की गयी वस्तु है, और न ही किसी पैदा की गयी चीज़ की पहचान है। जिब्रील (अलैहिस्सलाम) बारम्बारता से समय अनुसार लगभग तेईस वर्ष की अवधि में इस कुरआन को मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास लेकर आये। अल्लाह कहता है:

"और (यह) कुरआन जिसको हमने (भागों में) बांटा है, ताकि तुम लोगों के पास अन्तराल से पढ़ो। और हम ने इसे किस्तों में उतारा है।'' (सूरह अल-इसरा : १७: १०६)

संदेष्टा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जो भी कुरआनी आयात (श्लोक) उतरता आप उन्हें खुद याद कर लेते थे और अपने साथियों के पास उन्हें पढ़ते थे, और उन्हें तुरन्त लिखने का आदेश देते थे। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम स्वयं भी उस लिखित कापी की एक प्रति अपने घर में रखते थे। कुरआन, अल्लाह की अंतिम पुस्तक ११४ सूरह में बांटी गयी है, ये सभी चैप्टर अलग-अलग लम्बाई के हैं। (अर्थात कोई छोटा कोई बड़ा है) यह इस्लामी शरीआ (क़ानून) का प्रथम मूल स्रोत है। अल्लाह कहता है:

"अल्लाह का एक संदेष्टा (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) जो पढ़ते हैं (कुरआन के) पाक पन्नों को {जो सभी गलतियों से पाक है} जिन में अल्लाह की सत्य और सीधी बातें लिखी हैं।'' (सूरह अल-बय्यिनात : ९८:२,३)

"अल्लाह ने कुरआन के कुछ (भाग) मक्का में उतारा और बाक़ी को मदीना में उतारा मक्की सूरह (चैप्टर या अध्याय) में विशेष रूप से वे बातें हैं जो अक़ीदा से संबंधित हैं जैसे तौहीद (अल्लाह का एक होना), अल्लाह के वजूद में होने की निशानियां, और दूसरी ज़िन्दगी का दिन। वह चैप्टर जो मदीना में उतारा गया उसमें सरकार, समाज और नियमों से संबंधित बातें हैं। अल्लाह के एक होने की बात संदेष्टा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पहुंचा दिया, और यही कार्य अल्लाह के सभी संदेष्टाओं ने किया।

कुरआन की प्रमाणिकताः

मुस्लिम उम्मह (राष्ट्र या कौम) ने जितनी रेख-देख, आदर और सम्मान व सुरक्षा इस पाक किताब का किया है दुनिया में किसी और क़ौम ने नहीं किया है। दूसरे पवित्र ग्रन्थों के समान कुरआन मुसलमानों के किसी विशेष समूह के पास नहीं रहा है, और इसी कारण से इसमें किसी भी प्रकार के काट-छांट या परिवर्तन का संदेह किया ही नहीं जा सकता। इस के बजाय यह सभी मुसलमानों की पहुंच में सदा रहा है। संदेष्टा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुसलमानों को आदेश दिया कि कुरआन की अथवा उसकी आयतों को वे अपनी नमाज़ में पढ़ें। अल्लाह सभी मुसलमानों को आदेश देता है कि अंतिम निर्णय हेतु अपने सभी झगड़ों को कुरआन के पास ले जाओ।

कुरआन को अंतिम रूप से तब जमा किया गया जबकि वे लोग, जिन्होंने इस को याद किया था, जीवित थे। अल्लाह ने यह वादा किया कि वह इसकी रक्षा करता है और क़यामत तक करेगा। अल्लाह कहता है:

> "वास्तव में हम ने ही इस ज़िक्र (कुरआन) को उतारा है और बेशक हम ही उसकी सुरक्षा करेंगे'' (सूरह अल-हिज्र : १५:९)

मुसलमान आज ठीक वही कुरआन पढते हैं जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और उनके साथियों के समय में पढ़ा जाता था। कुरआन में एक अक्षर भी न तो जोड़ा गया हो और न ही उस से निकाला गया है।

पहले के संदेष्टाओं के चमत्कार, जिनके द्वारा उन्होंने अपनी सत्यता प्रमाणित की, उनमें और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चमत्कार में अंतर यही है कि उनके चमत्कार उनके ही जीवन तक सीमित रहे जबकि कुरआन के चमत्कार प्रभावी, सदैव रहने वाला कयामत तक चैलेन्ज देने वाला है। अल्लाह कहता है:

"और यह कुरआन ऐसा नहीं है कि इस जैसा बना लिया जाए अल्लाह (जो आकाश और पाताल का मालिक है) के सिवा, परन्तु यह तसदीक़ करने वाला है अपने से पहले की (किताब की) और तफ़सीली बयान है उस में कोई संदेह नहीं है- सारे आलम के स्वामी की ओर से। अथवा वे कहते हैं: "उस (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने इसे गढ़ लिया है? कहो: 'फिर इस के समान एक सूरह ले आओ, और उन को भी बुला लो जिन को तुम बुला सकते हो अल्लाह के सिवा, यदि तुम सच्चे हो!'' (सूरह यूनुस : १०:३७,३८)

कुरआन विस्तारपूर्ण क़ानून:

कुरआन शरीअत (पवित्र क़ानून) के स्रोत के रूप में व्यवहारिक सतह पर इस्लाम के सबसे विस्तारपूर्ण क़ानून को स्थापित करता है। यह विस्तारपूर्ण है क्योंकि इस में सभी प्रकार के क़ानून सम्मिलित हैं साथ ही ऊँचे मकसद और नैतिक सिद्धांत एवं उन आस्थाओं पर आधारित है जिन को स्वीकार करना हर मुसलमान के लिए आवश्यक है। इस्लामी शरीअत केवल मुसलमानों के लिए ही नहीं बनी है परन्तु सभी के लिए और हर समय के लिए है। इस्लामी कानून आदमी

सहित अल्लाह की पैदा की गयी सभी वस्तुओं के प्रति कर्तव्यों को, मनुष्य के निजी जीवन से लेकर उसके सार्वजनिक जीवन तक में रहनुमाई करता है।

दूसरों ने कुरआन के बारे में क्या कहा?

"फिर भी प्राय: हम इस (कुरआन) को खोलते हैं तो सब से पहले हमें नफ़रत पैदा करता है, फिर आकर्षित करता, हैरान करता और अन्तत: हमारे आदर भक्ति को बढ़ाने पर विवश करता है....... अपने उद्देश्य से संबंधित इसकी शैली कठोर, शानदार और भयंकर है- कभी-कभी बहुत शानदार है- इस प्रकार यह किताब पूरे प्रभाव के साथ सभी ज़माने में प्रयोग एवं काम में लाने योग्य रहेगी।'' (गोईथे: टीपी ह्यूज: डिक्शनरी ऑफ़ इस्लाम पृष्ठ: ५२६)

"एक ऐसा काम जो बहुत शक्ति पैदा करता है और बेमेल भावनायें दूर के पाठकों में भी महसूस तौर पर पैदा करता है- इस समय और बल्कि मानसिक विकास की दृष्टि से हो- एक काम जो न केवल घृणा को जीतता है, जो इसके पढ़ने के समय शुरू से ही होता है, बल्कि ग़लत भावनाओं को हैरत और प्रशंसा में बदल देता है, इस तरह का काम आदमी के दिमाग़ की वास्तव में आश्चर्यजनक पैदावार है और मानव के भाग्यों के बारे में प्रत्येक सोचने वालों के सर्वोच्च लाभ का मामला है। (डा. स्तेनगास- डिक्शनरी आफ़ इस्लाम- पृष्ठ २६-२७)

"इसे (कुरआन को) एक साहित्यिक कार्य के रूप में अपने तौर पर पहले से बनाये गए उसूल आदि के द्वारा नहीं मापा जा सकता है,

बल्कि उन प्रभावों के द्वारा (मापा जा सकता है) जिस ने मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के अपने समय के लोगों और उनके देशवासी मानने वालों को प्रभावित किया। यदि यह अपने सुनने वालों को इतने शक्तिशाली रूप से प्रभावित करता है ताकि केन्द्र से दूर लोगों को जोड़ सके औरं विरोधी तत्वों को एक धागे में पिरो सके और उसको एक अच्छे संक्षिप्त रूप में तैयार किया जा सके, तो इस ने इस बात को सजीव रूप से अपने विचारों से साबित किया उन तमाम लोगों पर जो अब भी अरबियों के द्वारा शासन किये जाते हैं, और फिर इसकी व्याख्या शक्तिपूर्ण है क्योंकि इस ने एक जंगली असभ्य कबीले को सभ्य राष्ट्र बना दिया और इतिहास के चादर में एक नया ताज़ा बाना बुन दिया।'' (उपरोक्त : पृष्ठ- ५२८)

"इस (कुरआन) का अच्छे ढंग से अध्ययन, नए ज्ञान के प्रकाश में हम को दोनों के बीच संधि मानने की ओर ले जाता है, जो कि पहले ही बार-बार भिन्न अवसरों पर दोहराया जा चुका है। हम को यह विश्वास दिलाता है कि इस तरह की बात का (या किताब) लेखक मुहम्मद साहब के समय का आदमी हो ही नहीं सकता है कि उन दिनों में ज्ञान और इल्म की हालत ही ऐसी थी। इस तरह का विचार कुरआन के प्रकट होने को विशेष स्थान देता है, और ग़ैर जानिबदार वैज्ञानिकों को मजबूर करता है कि अपनी अयोग्यता को इसकी व्याख्या हेतु साबित करे जो कि मात्र अनात्मावाद विचार को बढ़ावा देता है। (मौरिस बुकाई, दि कुरआन एण्ड मॉडर्न साइन्स, १९८१, पृष्ठ ११८)

ईसा (मसीह) कौन है?

यद्यपि इस्लाम में हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) का बहुत आदर किया जाता है परन्तु इस्लाम उनके पूज्य होने के विचार को स्वीकार नहीं करता है या यह कि वह अल्लाह का पुत्र हैं। यह बात अथवा खुदा से संबंध किसी तीन खुदा की आस्था या यह व्याख्या कि हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) अवतार, आध्यात्मिक, या खुदा का शरीरिक रूप हैं, ये सभी बातें इस्लाम में रद्द हैं। अल्लाह कहता है:

"ऐ किताब वाले (ईसाईयों)! अपने धर्म में सीमा से आगे मत बढ़ो, और अल्लाह के बारे में सत्य के सिवा कुछ न कहो। ईसा मसीह, मरयम का पुत्र, अल्लाह के संदेष्टा और उसके शब्द के सिवा अधिक कुछ न थे (शब्द का अर्थ यह है कि उसके बारे में कहा: "हो जा'' और वह हो गए) जिस (शब्द) को उस ने मरयम की ओर भेजा और एक आत्मा (रूह) उस

के द्वारा पैदा किया गया। अत: अल्लाह और उसके संदेष्टा के बारे में विश्वास रखो। तीन मत कहो। रुक जाओ (यह) तुम्हारे लिए अधिक अच्छा है। क्योंकि अल्लाह तो मात्र एक ही है, पाकी है उसके लिए कि उसके पुत्र हो। आकाश और पाताल में जो भी है सब उसी का है। अल्लाह सभी मामले को निपटाने के लिए काफ़ी है, मसीह कभी घृणा नहीं महसूस करते कि वे अल्लाह के बन्दे हैं, न ही वे फ़रिश्ते जो (अल्लाह के) निकट हैं। और जो कोई उसकी इबादत को नकारता और घृणा करता है, तो वह सभी उन लोगों को अपने पास इकट्ठा करेगा'' (अन्निसा : ४: १७१, १७२)

"(याद करो) जब अल्लाह (क़यामत के दिन) कहेगा: ऐ ईसा (मसीह), मरयम के पुत्र! अपने ऊपर और अपनी माता के ऊपर हमारी कृपा को याद करो जब मैं ने तुम्हारी रूहुलकुदुस (जिब्रील) के द्वारा समर्थन दिया ताकि तुम बात करो गोद में और उम्र अधेड़ में, और जबकि मैं ने तुम को किताब सिखाया, अल-हिकमह (समझने की शक्ति) तौरेत और इंजील, और जब तुम मेरी इजाज़त से मिट्टी से पक्षी की मूर्ति बनाते, और जो जन्मजात अंधा पैदा होता उसको और सफ़ेद दाग़ वालों को ठीक कर दे मेरी अनुमति से, और जब तुम मुर्दों को मेरी अनुमति से जीवित कर देते थे, और जब मैंने इसराईल के बच्चों से तुम को रोका (जब वह तुम को मारना चाहते थे।) जब कि तुम उन के पास मेरे स्पष्ट प्रमाणों के साथ गये थे,

और उनके बीच के काफ़िरों ने कहा कि यह तो बिल्कुल खुला जादू है।''

"और जब हमने अल हवारीईन (ईसा मसीह के शागिर्दों) के दिलों में यह बात डाली कि मुझ पर और मेरे संदेष्टा पर ईमान लाओ, तो उन लोगों ने कहा: हम लोग ईमान लाते हैं और तू गवाह रह कि हम लोग मुसलमान हैं''

"(याद कीजिए) जब हवारीईन (शागिर्दों) ने कहा: ऐ ईसा (मसीह), मरयम के पुत्र, क्या आप का मालिक हमारे लिए आकाश से खाने से सजा थाल भेज सकता है?'' ईसा (मसीह) ने कहा: तुम अल्लाह से डरो यदि तुम वास्तव में ईमान वाले हो।''

उन लोगों ने कहा हम उसमें से खायें और हमारे दिल संतुष्ट हों (ईमान में अधिक मज़बूती हेतु) और यह जानने के लिए कि आप ने हम से सत्य कहा और ये कि हम स्वयं इस पर गवाह हों।'

ईसा (मसीह), मरयम के पुत्र, ने कहा: ऐ अल्लाह हमारे मालिक! हमारे लिए आकाश से ऐसा थाल भेजिए जो खाने से सजा हो कि वह हम सबके लिए- हम से पहले और पिछले लोगों के लिए एक त्योहार और एक निशानी हो तेरी ओर से; और हमें रोज़ी दीजिए कि तू सबसे अच्छा रोज़ी देने वाला है।'

"अल्लाह ने कहा: 'मैं इसे तुम्हारी ओर उतारने वाला हूँ, परन्तु यदि तुम में से कोई इसके पश्चात इंकार करता है तो मैं

उसको कठोर दण्ड दूंगा कि जैसा आलमीन (मानव और जिन्न) में से किसी को नहीं दिया हूंगा।

"और (याद करो) जब अल्लाह (क़यामत के दिन) कहेगा: "ऐ ईसा (मसीह), मरयम के पुत्र! क्या तुम ने लोगों से कहा था कि अल्लाह के सिवा मेरी और मेरी माता की दो माबूद के रूप में इबादत करो?'' वह कहेंगे: "तू पाक है! यह बात मेरे लिए जायज़ नहीं कि मैं वह बात कहूं जिस (के कहने) का मुझे अधिकार नहीं। यदि मैं ने ऐसा कहा है तो तू सब जानता है। मेरे अन्दर किया है तू सब जानता है और मैं नहीं जानता तेरे अन्दर क्या है; वास्तव में तू और केवल तू सभी छिपे (और न दिखाई देने वाले) को जानने वाला है। मैं ने तो उन से वही कहा जिसका तूने मुझे हुक्म दिया कि अल्लाह ही की इबादत करो जो मेरा और तुम्हारा भी मालिक है। और जब तक मैं उन में रहा मैं उस पर गवाह था, परन्तु जब तूने मुझे उठा लिया तो तू ही उस को देखने वाला था; और तू हर चीज़ पर गवाह है।'' (पूरी दुनिया के ईसाईयों के लिए यह बहुत बड़ी चेतावनी है) (अल-मायदा : ५:११०-११७)

ईसा अलैहिस्सलाम के जन्म के सम्बन्ध में अल्लाह कहता है:

"और किताब में (कुरआन में ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कहानी) मरयम की उल्लेख करो जब उस ने अपने परिवार से अलग होकर पूरब की ओर तंहाई में लग गयी। उसने उन से एक पर्दा कर लिया; फिर हम ने उसकी ओर

अपने रूह (फ़रिश्ता जिब्रील) को भेजा, और वह उसके सामने एक आदमी के रूप में पूरे सम्मान से ज़ाहिर हुआ। वह बोली: हक़ीक़त में मैं अल्लाह की पनाह चाहती हूं, तुझ से यदि तुम को अल्लाह का डर है। (फ़रिश्ते ने) कहा: मैं तो मात्र अल्लाह तुम्हारे मालिक का संदेष्टा हूं (सूचना देने के लिए) तुम को एक नेक पुत्र का। वह बोली: मुझे लड़का कहाँ से होगा जब कि किसी मनुष्य ने मुझे छुआ तक नहीं है, और न ही मैं बदकार हूँ। उसने कहा: यूं ही तेरे रब्ब ने फ़रमाया है कि यह मुझे आसान है और इस लिए कि हम इसे लोगों के वास्ते एक निशानी और अपनी ओर से एक दया करें, और यह ऐसा मामला है (जो पहले ही) (अल्लाह के द्वारा) फ़ैसला हो चुका है।''

"अत: वह गर्भवती हो गयी, फिर उसे लिए हुए दूर चली गयी (यानी बैते लहम की घाटी में जो यूरोशलम से ४-६ मील की दूरी पर है) और फिर उसे बच्चा जनने का दर्द एक खजूर की जड़ में ले आया। वह बोली हाय इस से पहले मर गयी होती और भूली बिसरी हो जाती। फिर (शिशु ईसा ने अथवा जिब्रील ने) उस को उसके तले से पुकारा: "चिन्ता न करो: तेरे स्वामी ने तेरे नीचे एक नहर बहा दी है। और खजूर की जड़ पकड़ कर अपनी ओर हिला तुझ पर ताज़ी पकी खजूरें गिरेंगी। तुम खाओ और पीओ और खुश रहो। फिर यदि किसी मनुष्य को देखो तो कह देना कि मैं ने सबसे मेहरबान

(अल्लाह) का रोज़ा माना है अतः मैं किसी मनुष्य से बात न करूंगी। फिर उस (बच्चे) को अपने साथ लिए लोगों के पास आई। उन लोगों ने कहाः ऐ मरयम! वास्तव में तूने बहुत बुरी बात की।'

"ऐ हारून की बहन! तेरा बाप बुरा आदमी न था और न तेरी माँ बदकार थी। इस पर मरयम ने बच्चे की ओर इशारा किया। वे बोलेः हम कैसे बात करें उस से जो गोद में बच्चा है? उस (ईसा मसीह) ने कहाः बेशक मैं अल्लाह का बन्दा हूँ, उस ने मुझे एक किताब दिया और नबी बनाया, और उसने मुझे मुबारक बनाया है जहाँ भी रहूँ और मुझे नमाज़ और ज़कात की ताकीद की जब तक जीवित रहूँ। और अपनी माँ से अच्छा व्यवहार करने वाला बनूं और उस ने मुझे घमण्डी नहीं बनाया। और मुझ पर सलाम (शान्ति) हो जिस दिन मैं ने जन्म लिया और जिस दिन मैं मरूँ और जिस दिन जीवित उठाया जाऊँ। यह है ईसा, मरयम का पुत्र। (यह है) सच्ची बात जिसके सम्बन्ध में वे लोग संदेह करते (या झगडा करते) हैं।

"अल्लाह को यह शोभा नहीं कि किसी को अपना बच्चा ठहराए (यह बात अल्लाह के विरुद्ध ईसाईयों की निन्दा करती है, जो यह कहते हैं कि ईसा (मसीह) अल्लाह के बेटे हैं) पाकी है उस के लिए (उन सभी बातों से जो वे लोग उनके साथ साझी बनाते हैं)। वह जब किसी काम का फैसला करता है तो वह

केवल कहता है उसे, हो जा और वह हो जाता है। (ईसा मसीह ने कहा): और नि:संदेह अल्लाह मेरा और तुम्हारा मालिक है। अत: (केवल अकेले) उसी की इबादत करो। यही सच्चा रास्ता है।'' (अल्लाह का धर्म इस्लामी तौहीद जिस का आदेश उसने अपने सभी संदेष्टा को दिया था) (मरयम : १९:१६-३६)

ईसा अलैहिस्सलाम सूली पर चढ़ कर मरे नहीं, जैसा कि सामान्यत: ईसाईयों के द्वारा विश्वास किया जाता है, उस के बजाय अल्लाह ने उन को अपनी ओर उठा लिया। कोई दूसरे थे जिन्हें वास्तव में सूली दी गयी।

अल्लाह कहता है:

"और उनके (डींग में) कहने के कारण कि 'हम ने मसीह ईसा, मरयम के पुत्र, अल्लाह के संदेष्टा को जान से मार डाला- परन्तु उन लोगों ने उन्हें नहीं मारा, न ही उन को सूली दी, उन के सामने (ईसा मसीह के समान) ज़ाहिर हुए दूसरे किसी मनुष्य (को चढ़ाया गया और उन लोगों ने उस मनुष्य को मार डाला) और जो भिन्न विचार वाले हैं वे पूरे संदेह में हैं। उन के पास (पूर्ण) जानकारी नहीं हैं, वे लोग मात्र अनुमान का पालन करते हैं। वास्तव में उन लोगों ने उन (ईसा मसीह, मरयम के पुत्र अलैहिस्सलाम) को नहीं मारा: परन्तु अल्लाह ने उन (ईसा मसीह) को अपनी ओर उठा लिया (उन के शरीर और उनकी आत्मा सहित) (और वह आकाश

में हैं) और अल्लाह सब से ताक़तवाल अकलमंद है।'' (सूरह अन्निसा : ४:१५७-८)

अल्लाह ने ईसा अलैहिस्सलाम को कुछ ख़ास चमत्कार दिखाने योग्य बनाया जो उनकी सच्चाई और प्रामणिकता की निशानी हो। इसी बात को इन आयात में कहा गया है:

"और (हम बनाएंगे) उन (ईसा मसीह) को एक संदेष्टा इसराईल के बच्चों की ओर (यह कहते हुए कि:) "मैं तुम्हारे पास तुम्हारे मालिक की ओर से एक निशानी के साथ आया हूँ कि मैं मिट्टी से चिड़िया का एक रूप बनाता हूँ और फिर उस में फूंकता हूँ और यह अल्लाह के आदेश से एक चिड़िया बन जाती है, और मैं जन्मजात अंधे और सफ़ेद दाग वाले का इलाज करता हूँ, और मैं मुर्दों को जीवित करता हूँ अल्लाह के आदेश से, और मैं तुम को बताता हूँ जो कुछ तुम खाते हो और जो कुछ तुम अपने घरों में जमा करते हो। बेशक इस में उन लोगों के लिए निशानी है जो ईमान (विश्वास) वाले हैं।'' (सूरह आले-इमरान : ३:४९)

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम अभी आकाश में हैं। क़यामत के निकट एक बड़ी निशानी के रूप में, वह अन्त में धरती पर उतरेंगे। अल्लाह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के सम्बन्ध में बताते हुए कहता है:

"वह (ईसा अलैहिस्सलाम) एक बन्दे से अधिक कुछ न थे। हम ने उन पर अपनी मेहरबानी की और हम ने उन को

इसराईल की संतान के लिए एक उदाहरण बनाया यानी (बिना पिता के उनके जन्म होने की दृष्टि से) (सूरह अज़-ज़ुखरूफ़ : ४३:५९)

अल्लाह और कहता है:

"और वह (ईसा मसीह), मरयम के पुत्र, क़यामत की निशानी होंगे (ईसा का धरती पर उतरना) अतः उस (क़यामत) के बारे में संदेह मत करो। और मेरा (अल्लाह का) आज्ञाकारी रहो और वह जो आदेश देता है वही करो ऐ मानव!) यही सीधा मार्ग है (इस्लामी तौहीद जो अल्लाह और जन्नत की ओर ले जाता है)'' (सूरह अज़-ज़ुख़रूफ़ : ४३:६१)

अल्लाह ने सभी जीव जन्तुओं को अपनी इबादत के लिए पैदा किया, और उनको रोज़ी मुहैय्या करके इस के करने योग्य बनाया।

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"मैंने जिन्न और इंसान को केवल अपनी इबादत के लिए पैदा किया, मैं उन से कोई आहार नहीं चाहता और न ही मैं चाहता हूँ कि वह मुझे खिलाएं। वास्तव में अल्लाह वही रोज़ी देने वाला, शक्तिशाली है।'' (सूरह अज़-ज़ारियात : ५१: ५६-५८)

इंसान स्वाभाविक रूप से अल्लाह के पूज्य होने को मानता है, उसे प्यार करता है, उसकी इबादत करता है और उस के लिए कोइ साझी नहीं बताता है। परन्तु मानव और जिन्न शैतान जो एक दूसरे को

चिकनी-चपड़ी बातों से धोखा देकर उसे उसके स्वभाव से भ्रष्ट कर देता और उसे गुमराह कर देता है।

तौहीद[1] (एकश्वरवाद) मानव के स्वभाव में रग-रग में मज़बूती से बसा है, जब कि कई देवताओं में विश्वास रखना आकस्मिक और अनाधिकृत प्रवेश है।

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"और मज़बूती से दीन[2] हनीफ़[3] पर अटल रहो, वह धर्म जिस पर अल्लाह ने मानव को पैदा किया। अल्लाह के दीन में कोई परिवर्तन नहीं है।" (सूरह अर्रूम : ३०:३०)

और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"हर शिशु एक स्वाभाविक स्वभाव (फ़ितरत) (अल्लाह को जानने की वह शक्ति जिस पर मनुष्य का जन्म हुआ है) पर पैदा होता है, परन्तु उसके माता-पिता उस को यहूदी, अथवा ईसाई अथवा मजूसी बना देते हैं।" (बुखारी, मुस्लिम)

अतः तौहीद अथवा अल्लाह के एक होने पर ईमान मनुष्य का स्वाभाविक विश्वास है।

---

[1] अल्लाह के एक होने का विश्वास २. अरबी में उस जीवन मार्ग का नाम है जो किताब और सुन्नत पर आधारित है और अल्लाह के संदेष्टा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क्रे द्वारा दोनों का अनुसरणीय प्रयोग है।

इस्लाम वह धर्म है जिसे आदम द्वारा अपनाया और समर्थन दिया गया, जिन को अल्लाह ने शैतान से सुरक्षित रखा, और उन लोगों के द्वारा भी (इसी धर्म को अपनाया गया) जो उन के पश्चात सदियों तक मनुष्य आए।

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"मानव एह ही समुदाय थे, फिर अल्लाह ने संदेष्टाओं को शुभ समाचार देने वाला एवं चेतावनी देने वाले बना कर भेजा।" (सूरह: अल-बकरा : २:२१३)

अनेक देवताओं में विश्वास और मत सम्बन्धी बिगाड़ सब से पहले नूह (नबी) के लोगों में ज़ाहिर हुआ जो प्रथम संदेष्टा थे जिन्हें अल्लाह ने अपनी बातों से प्रमाणित किया था।

"हमने आप की ओर वही नाज़िल किया जो नूह पर किया और उन संदेष्टाओं पर भी जो उन के बाद थे।" (सूरह अन्निसा : ४:१६३)

अल्लाह पर ईमान (विश्वास) लाने और उसकी इबादत की मांगों में से एक यह है कि उस के निर्णय का पालन करना, उसके नियम (क़ानून) से संतुष्ट रहना और अपने सभी झगड़े, सारे मामले, मूल अधिकार, मुकद्दमेबाज़ी, ख़ून, सम्पत्ति और दूसरे सभी अधिकारों से सम्बन्धित निर्णय के लिए उत्तर उसकी किताब और उसके संदेष्टा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत में ढूंढे। अल्लाह शासकों से फ़रमाता है:

"अल्लाह तुम को आज्ञा देता है कि तुम अमानत (धरोहर)[1] को उसके असल मालिक को दे दो, और जब तुम लोगों के बीच फ़ैसला करो तो इंसाफ़ के साथ फ़ैसला करो। और बेशक अति शानदार है वह बात जिस से अल्लाह तुम को होशियार कर रहा है। अल्लाह सब कुछ सुनने वाला, देखने वाला है। (सूरह अन्निसा : ४:५८)

इसी सम्बन्ध में और फ़रमाया:

'ऐ वो लोगों जो ईमान लाये हो, अल्लाह और उसके संदेष्टा की, और उनकी जो तुम्हारे बीच तुम्हारे प्रभावशाली व्यक्ति हैं, की आज्ञा का पालन करो। और यदि तुम किसी मामले में झगड़ पड़ो तो उसे अल्लाह और उसके संदेष्टा की ओर लौटा दो यदि तुम वास्तव में अल्लाह पर और अंतिम दिन पर ईमान (विश्वास) लाए हो, यह नतीजा के लेहाज़ से सबसे अच्छी बात है।'' (सूरह अन्निसा : ४:५९)

---

1 अमानत का अर्थ है अल्लाह के अधिकार और उसकी सभी आज्ञाओं सहित मानव के वे सभी अधिकार जो दूसरे मुनष्य पर हैं।

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कौन हैं?

सभी पैग़म्बरों एवं संदेष्टाओं में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सबसे अंतिम हैं जिनको अल्लाह ने मानव की ओर भेजा है। उनका पूरा नाम मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम है।

जीवन और धर्म प्रचारः

वह मक्का में हाथी वाले वर्ष, ५७० ई. में पैदा हुए थे। उनके पिता अब्दुल्लाह के देहान्त के पश्चात, वह अपने दादा अब्दुल मुत्तलिब की देख-भाल में रहे। उस समय शिशुओं और बच्चों को शहर से बाहर के अधिक स्वस्थ माहौल में पालने की परम्परा थी, अत: उन को एक शिशु के रूप में एक भ्रमणकारी कबीला की देख भाल करने वाली महिला को दे दिया गया और उन्होंने रेगिस्तान में कुछ वर्ष बिताया। छ: वर्ष की आयु में उनकी मां आमिना जो ज़ोहरा खानदान की थीं,

देहांत कर गई, और आठ वर्ष की आयु में उनके दादा अब्दुल मुत्तलिब का भी देहांत हो गया।

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अब खानदान के नए मुखिया अपने चाचा अबू तालिब की देख-रेख में आ गए, जो उनको लगभग ५९५ई. में सीरिया की एक सफ़ल व्यापारिक यात्रा पर ले गये।

उसके तुरन्त बाद वे एक दूसरी व्यापारिक यात्रा पर गए जिस में वह हज़रत खदीजा (रज़ि अल्लाहु अन्हा) के कारोबार के प्रभारी थे, जो कुरैश कबीला की एक धनी महिला थी। वह उनकी विश्वासनीयता से प्रभावित हुई और आप से विवाह कर लिया। वह चालीस वर्ष की थी, आप से आयु में पन्द्रह वर्ष बड़ी थीं। उन से उन्हें दो पुत्र हुए जो बचपन में ही मर गए, चार पुत्रियां: रूकैय्या, ज़ैनब, उम्मे कुलसूम और फातिमा (रज़ी अल्लाहु अन्हुन्ना) हुईं। हज़रत फ़ातिमा पैग़म्बर के चचेरे भाई हज़रत अली (रज़ी अल्लाहु अन्हु) की पत्नी हुईं।

पैग़म्बर का धर्म प्रचारः

पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आदत थी कि आप समय-समय पर रातें मक्का के निकट एक पहाड़ की गुफ़ा में बिताया करते थे। मक्का में क़ुरैश क़बीला के लोग बसे थे जो कि हाशिम के वंश से थे, यह नगर पाक घर काबा के कारण व्यापार केन्द्र था, जो सभी के लिए पाक जगह थी और जो यहाँ आया करते थे उन के लिए निश्चित सुरक्षा थी। लगभग ६१० ई. में पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सब से पहले कुरआन की पाक

आयतों को फ़रिश्ता हज़रत ज़िब्रील (अलैहिस्सलाम) के माध्यम से प्राप्त किया। अल्लाह कहता है:

"पढ़ो! अपने रब के नाम से जिस ने (सभी वह जो वजूद में हैं) पैदा किया। उस ने इंसान को खून के एक थक्के से पैदा किया। पढ़ो! और तुम्हारा रब सब से अधिक दाता है। जिसने (लिखना) कलम से सिखलाया। उसने मनुष्य को वह सिखलाया जो वह नहीं जानता था।" (सूरह अल-अलक : ९६,१-५)

हज़रत जिब्रील (अलैहिस्सलाम) ने आप से कहा, "आप अल्लाह के संदेष्टा हैं।" यहीं से आपकी मृत्यु तक, थोड़े-थोड़े समय पर, सीधे अल्लाह की ओर से आप पर वह्यी (दैवी प्रेरणा या आलोक) आती थी, जिसे लिख लिया जाता था। कुछ समय बाद इन्हें एक पुस्तक यानी कुरआन के रूप में जमा किया गया जो आज तक नहीं बदला गया है। कुरआन में वास्तव में स्वयं अल्लाह के अपने ही शब्द हैं।

ख़दीजा (रज़ि अल्लाहु अन्हा) के ईसाई चचेरे भाई ने इन वह्यियों की पुष्टि करते हुए कहा कि यह बिलकुल वैसा ही है जो अल्लाह के द्वारा हज़रत मूसा और ईसा अलैहिमुस्सलाम को भेजा जाता था।

पहली वह्यी से ही आप को बताया गया कि आप इन्हें लोगों में प्रसार करें। अल्लाह कहता है:

"ऐ (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) चादर में लिपटे हुए! उठो और चेतावनी दो! और अपने रब (अल्लाह) की बड़ाई करो।" (सूरह अल-मुदस्सिर : ७४:१-३)

तुरन्त ही उनके कुछ नज़दीकी जान-पहचान के जो उनके संग रहते थे, उन लोगों ने इस्लाम को स्वीकार कर लिया। बाद में आप खुले तौर से प्रचार करने लगे, और पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आप के अनुयायी अपने दिनों को अल-अरक़म के घर में गुज़ारने लगे। उस समय मक्का के लोग मूर्तिपूजक थे और मूर्तियों की पूजा करते थे। खुले तौर से अपने संदेश की घोषणा से पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के और अधिक अनुयायी हो गये, जिन में अधिकतर युवा थे, जब कि पूर्व में उन लोगों ने इस नये धर्म का विरोध किया था। नए ईमान लाने वालों में बेटे भाई सभी शामिल थे जो कि मक्का के सबसे धनी लोग थे जब कि दूसरे कुछ ऐसे लोग थे जिनको "कमज़ोर'' समझा जाता था जिसका अर्थ था कि जिन को किसी क़बीला का समर्थन नहीं है और न ही उनकी किसी खानदान के द्वारा रक्षा होती थी। यह नया दीन (धर्म) इस्लाम था, जिसका अर्थ अल्लाह सब से ताक़तवर की आज्ञा का पालन करना है, और इसके अनुयायी मुस्लिम हैं जो अल्लाह की आज्ञा का पालन करते हैं।

मक्का में विरोधः

जब पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मूर्ति पूजा की भर्त्सना करने और तौहीद (अल्लाह के एक होने में विश्वास) का प्रचार करने लगे तो विरोधी सक्रिय हो गए।

"और जब वे लोग आपको (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) देखते हैं तो आप का मज़ाक उड़ाते हैं (यह कहते हुए कि) क्या यही है वह जिस को अल्लाह ने संदेष्टा के रूप

में भेजा है? करीब था कि यह हमें हमारे देवताओं से बहका दें, यदि हम इन की पूजा में संयम नहीं बरतते! और वे लोग जब अज़ाब को देखेंगे तब जान जायेंगे कि (सीधे) मार्ग से कौन सब से बहका हुआ था।'' (सूरह अल-फुरक़ान : २५:४१-४२)

अबू जहल नाम का एक विरोधी नेता खड़ा हुआ, जिसने हाशिम के वंश वालों को मक्का के दूसरे बड़े वंशों से बायकॉट करने की योजना बनाई क्योंकि वे (हाशिम के लोग) पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की लगातार सुरक्षा कर रहे थे और उनको धर्म प्रचार से नहीं रोक रहे थे।

६१९ ई. में ख़दीजा (रज़ि अल्लाहु अन्हा) पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पत्नी और आप के चचा अबू तालिब दोनों दुनिया से चल बसे। अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क़बीलों के बीच धर्म प्रचार करते रहे और इसी क्रम में आप दावत देने ताएफ़ गये ताकि वहां के क़बीले आपके संदेश को स्वीकार कर लें, परन्तु उन लोगों ने उसे स्वीकार करने से इन्कार कर दिया। ६२० ई. में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की भेंट मदीना के ख़ानदान वालों से हुई, जिस से ६२२ में हिजरत (पलायन) की राह मिली।

कुछ मुसलमान उत्पीड़न के कारण ६१५ ई. में ईथोपिया हिजरत कर गये थे, उन में से कुछ लोग वहां ६२८ ई. तक रहे, अर्थात पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मदीना में स्थापित हो जाने के बहुत बाद तक वे लोग वहीं रहे।

हिजरत (पलायन या उत्प्रवास):

मदीना के बारह आदमी ६२१ ई. में गर्मी में वार्षिक हज के लिए मक्का आये। वे लोग गुप्त रूप से पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मिले, इस्लाम को स्वीकार किया और मदीना वापस चले गये, और वहाँ इस्लाम का प्रचार करने लगे। कुछ वर्ष बाद, हज के अवसर पर, मदीना के ७५ लोगों का एक प्रतिनिधि, जिन में दो महिलायें भी थीं, ने न केवल इस्लाम को स्वीकार किया बल्कि वादा किया कि वे पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आज्ञा का पालन करेंगे और रक्षा ऐसे करेंगे कि जैसे वह उन के अपने परिवार वाले हैं। इन्हें अल-अक्बा के दो बैअत के रूप में जाना जाता है। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अब अपने भरोसेमंद साथियों को छोटे-छोटे समूह में मदीना की ओर कूच करने के लिए साहस दिलाया।

अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथी मदीना चले गये, परन्तु आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना हिजरत के वास्ते इलाही इजाज़त के लिए इंतज़ार करते रहे। हज़रत अबू बक्र और हज़रत अली (रज़ी अल्लाहु अन्हुमा) के अलावा और दूसरे कुछ ऐसे मुसलमान जिन्हें प्रतिरोध का सामना था और कुछ लोग जिन्हें अपना (नया) धर्म छोड़ने के लिए मजबूर किया जा रहा था, उन्हें छोड़ आप के सभी साथी मदीना चले गये।

क़ुरैश ने देखा कि अल्लाह के रसूल के साथी कुछ उनके अपने क़बीले से हैं तो कुछ दूसरे क़बीले से हैं और ये सभी क़ुरैश के क्षेत्र

से बाहर हैं। जब ये लोग अपने नए घर मदीना में बस गए, और सुरक्षित हो गए, तो कुरैश को डर हुआ कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उन से जा कर मिल सकते हैं और फिर वे उन के क़ाबू से बाहर हो जायेंगे। अतः उन लोगों ने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जान से मार डालने की साजिश की, इस योजना हेतु उन लोगों ने हर एक क़बीला से एक-एक आदमी को लिया ताकि इन युवाओं के द्वारा आप पर एक साथ क़त्ल के लिए हमला करें। लेकिन हज़रत जिब्रील (अलैहिस्सलाम) ने आप को उस रात जिस में आप को मारने की साजिश रची गई थी, अपने बिस्तर पर सोने से मना कर दिया। उस रात का अधिकतर भाग बीतने से पहले ही वे लोग आपके घर के दरवाज़े पर आप के सोने का इंतज़ार करने लगे। जब पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन लोगों को देखा तो आपने एक मुट्ठी धूल ली और उनके बीच से निकले, परन्तु चमत्कार के कारण वे लोग आप को नहीं देख रहे थे। आप उनके सरों पर धूल डालते हुए वहां से अपने रास्ते पर निकल गए। (अब) वे लोग आपके कमरे में प्रवेश करते हैं परन्तु वहां हज़रत अली (रज़ी अल्लाहु अन्हु) को आपके बिस्तर पर सोए हुए पाया, जिन्होंने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के होने के प्रति उन लोगों को भ्रम में डाला। उन लोगों की पूरी रात बेचैनी से इंतज़ार करने के बाद जब हज़रत अली (रज़ी.अल्लाहु अन्हु) सुबह में बाहर निकले तो उन लोगों ने अपने आप को नाकाम और बेवकूफ़ महसूस किया।

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अली (रज़ी अल्लाहु अन्हु) को अपने पीछे रहने के लिए कहा ताकि वह उन लोगों की क़ीमती चीज़ों को लौटा दें जो लोग आपके पास अमानत रखे हुए थे इसलिए कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी ईमानदारी में मशहूर थे। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने सब से नज़दीकी साथी अबू बक्र (रज़ी अल्लाहु अन्हु) के पास आए, और वे लोग वहाँ से बच कर मक्का के पास सौर पहाड़ में चले गये। वे लोग वहां तीन दिन तक रहे, अबू बक्र के पुत्र और पुत्री उन्हें समाचार और आहार पहुंचाते थे।

जब कुरैश ने समझा कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बच कर निकल चुके हैं तो उन लोगों ने यह इनाम रखा कि जो कोई उन को उन के पास वापस लाएगा उसे एक सौ ऊंट इनाम में मिलेंगे। आख़िर में दो ऊंट उन दोनों के लिए लाया गया और वे लोग सवार होकर चले। वे लोग मदीना के उपनगर कुबा में १२ रबीउल अव्वल को पहुंचे। आपके साथी आप के लेने हेतु बाहर निकले, हर कोई बहुत खुश था। आप कुबा में चार दिन ठहरे रहे, फिर आप ने मदीना में अपनी मसजिद और रहने के कमरे का शिलान्यास किया। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मदीना आना रस्मी तौर से इस्लामी कैलेण्डर की शुरूआत है, उस समय आपकी आयु ५३ वर्ष थी, और वह पश्चिमी कैलेण्डर का ६२२ ई. था। मदीना का खजूर बाग़ मक्का से अलग है यहां खजूर के पेड़ और फसलें उगाई जाती हैं।

प्रथम ख़ुतबा[1] (प्रवचन):

अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जुमा के अपने पहले ख़ुतबा में कहा:

'ऐ लोगों! अच्छे कामों की अपने लिए पूंजी जमा करो। अल्लाह की क़सम है, तुम सब जानते हो कि तुम में से हर एक मरेगा और अपनी भेड़ों को बिना चरवाहा के छोड़ देगा। फिर उस का रब अपने बीच में बिना किसी अनुवाद करने वाले के पूछेगा। क्या तुम्हारे पास मेरा पैग़म्बर (संदेष्टा) नहीं आया, और क्या मैंने तुम को धन नहीं दिया और क्या मैं ने तुम पर अपनी कृपा नहीं की? अपने लिए तुम लोगों ने क्या प्राप्त किया है? फिर तुम में से एक अपने दायीं ओर देखेगा और कुछ नहीं देखेगा, और बायें देखेगा और कुछ नहीं देखेगा। फिर वह अपने आगे देखेगा और नरक (जहन्नम) के सिवा कुछ न देखेगा। जो कोई अपने को आग से सुरक्षित कर सकता है वह कर ले चाहे खजूर के एक टुकड़े ही के माध्यम से हो, और जो यह भी नहीं पाता तो वह अच्छी बात बोले, क्योंकि अच्छे काम का इनाम दस गुणा से सात सो गुणा तक दिया जायेगा।

दो बड़े क़बीले मदीना में रहते थे: औस और ख़ज़रज जो तीन यहूदी कबीलों के हम ज़माना थे। जब पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

---

[1] ख़ुतबा एक इस्लामी शब्द है जिसका प्रयोग उस धार्मिक भाषण के लिए होता है जो आम तौर पर जुमा और ईद की नमाज़ से पहले दिया जाता है।

वहाँ स्थापित हुए मुसलमानों के बीच एक भाईचारा मुआहदा क़ायम कर दिया, आप ऐसे ही मुसलमानों और अरब के गैर मुस्लिमों के बीच दोस्ती सम्बन्ध स्थापित करने के इच्छुक थे। आपने एक प्रकार की ऐसी संधि स्थापित की जिसका उद्देश्य इस्लाम से पूर्व और क़बीलों की नफ़रत को समाप्त करना था। आप इस के प्रति इतने सजग थे कि आप उस क्षेत्र में कोई ऐसी जगह नहीं छोड़ना चाहते थे जहाँ इस्लाम से पूर्व के रीति-रिवाज प्रवेश करें जो कि उन नए माहौल को खराब कर दें जिसे आप क़ायम करना चाहते थे।

यह केवल आपकी अक़लमंदी और महारत थी कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नए समाज के खम्बे को उठाया। इस बेमिसाल व्यक्ति ने बेशक इसके निशानों को अच्छे और नेक चरित्र वाले मुसलमानों पर छोड़ा। आप उन्हें इस्लामी तालीम की रौशनी में पाला-पोसा करते थे, आप ने उन को पवित्र कर दिया, आप उन को मज़हबी और हुकूमत चलाने के तौर तरीक़े अपनाने का आदेश देते थे और आप इस के इच्छुक थे कि आप उनके अन्दर मित्रता, अनुशासन, सम्मान, इबादत और अल्लाह और उसके संदेष्टा के बारे में प्रथम और श्रेष्ठ आज्ञा पालन की भावना भर दें।

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक प्रसिद्ध दस्तावेज़ बनाया था जो मदीना के संविधान के रूप में जाना जाता था। इस ने मदीना में रहने वाले क़बीलों और मक्का के मुहाजिरों में परिसंध को जन्म दिया। कहा जाता है कि सभी प्रकार के झगड़े पैग़म्बर ﷺ के पास भेजे जाते थे।

मुसलमानों और मदीना के यहूदियों के बीच समझौता:

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक दस्तावेज़ बनाया जो मुहाजिरीन (मक्का से पलायन करके आए लोग) अन्सार (मदीना वासी) से सम्बन्धित था जिस में आप ने मैत्री संधि यहूदियों के साथ बना दी और उनके धर्म और सम्पत्ति की सुरक्षा के लिए इसे आपसी जिम्मेदारी बताया। वह बातें नीचे लिखी हैं:

मैं शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो सबसे अधिक मेहरबान और दयालु है।

यह मुहम्मद पैग़म्बर की ओर से दस्तावेज़ है (जो सम्बन्ध स्थापित करने के लिए है) कुरैश और यसरिब के मुसलमानों के बीच, और उन लोगों से भी है जो उन की आज्ञा का पालन करते हैं, उन से मिले हैं, और उनकी ओर से लड़ते हैं। ये सभी एक उम्मह (समुदाय) हैं अपने अतिरिक्त लोगों से।[1]

कुरैश के मुहाजिरीन, अपने प्रचलित रीति के अनुसार अपने बीच दीयत अदा करेंगे और सामान्य मुसलमानों के बीच अपने कैदियों को अच्छे ढंग से फ़िदया अदा करेंगे।

बनू औफ़ अपने वर्तमान रीति के अनुसार दीयत उसी प्रकार देंगे जिस प्रकार बीते काल में दिया करते थे; प्रत्येक दल अपने कैदियों को सामान्य मुसलमानों के बीच अच्छे ढंग से फ़िदया अदा करेंगे।

---

[1] "अपने अतिरिक्त लोगों से" बतलाता है कि यह संधि विशेष कर मुहाजिरीन, अंसार और मदीना के यहूदियों से संबंधित था।

बनू सादिया, अपने वर्तमान रीति अनुसार दीयत अदा करेंगे जिस प्रकार वे बीते काल में अदा करते थे; प्रत्येक दल अपने क़ैदियों को सामान्य मुसलमानों के बीच अच्छे ढंग से मुक्त दान अदा करेंगे।

बनू अलहारिस, अपने वर्तमान रीति के अनुसार दीयत अदा करेंगे जिस प्रकार के बीते काल में अदा करते थे। प्रत्येक दल अपने कैदियों को सामान्य मुसलमानों के बीच अच्छे ढंग से परिमुक्त करेंगे।

और बनू जूशाम, अपने वर्तमान रीति के अनुसार दीयत अदा करेंगे जैसे वे बीते काल में अदा करते थे। प्रत्येक दल अपने कैदियों को सामान्य मुसलमानों के बीच अच्छे ढंग से फ़िदया अदा करेंगे।

और बनू नज्जार भी इसी प्रकार करेंगे।[1]

बनू अमर बिन औफ़, बनू अन-नबील और बनू अल-औस भी इसी प्रकार करेंगे।[2]

और मुसलमान अपने बीच उसकी सहायता करेंगे जो कर्ज़ के बोझ तले दबे हैं, ताकि वे अपना कर्ज़ चुका सकें।

कोई मुसलमान दूसरे मुसलमान के विरूद्ध उसके विरोधी या दुश्मन को अपना मित्र नहीं बनाएगा।

अल्लाह से डरने वाले मुसलमान बाग़ियों के ख़िलाफ़ खड़े होंगे अथवा जो मुसलमानों के बीच जुल्म करना चाहते हैं, या कोई एक ग़लत

---

1 ये सभी अल खज़रज से संबंधित हैं।

2 ये सभी अल औस से संबंधित हैं।

कार्य करता या पाप का अपराध करता है या भ्रष्टाचार को बढ़ावा देता है; प्रत्येक आदमी का हाथ उसके विरुद्ध होगा चाहे वह उसका अपना पुत्र हो। एक मुसलमान किसी ग़ैर मुसलमान के बदले नहीं क़त्ल किया जायेगा। अल्लाह की सुरक्षा एक है, उन में का सामान्य व्यक्ति अपनी ओर सें किसी अनजाने को सुरक्षा दे सकता है।

मुसलमान एक दूसरे के मित्र एवं समर्थक हैं दूसरे बाहरियों को निकालने के लिए। वह यहूदी जो हमारे साथ हैं उनकी सहायता और अच्छा व्यवहार समानता के साथ किया जायेगा। उन पर जुल्म नहीं होगा न ही उनके शत्रुओं के साथ उनके विरुद्ध सहायता की जायेगी।

यह शांति संधि सभी मुसलमानों को शामिल है। जो लोग अल्लाह के लिए जिहाद कर रहे हों उन में से कुछ के लिए शांति शामिल और दूसरा ख़ारिज हो ऐसा नहीं होगा। अल्लाह के लिए लड़ाई सभी के लिए स्वच्छ और समानता के साथ होगी। हर एक हमला में एक घुड़सवार अपने पीछे दूसरे को ज़रूर रखे।

मुसलमान अल्लाह के रास्ते में एक-दूसरे के खून बहाने का बदला ले।

अल्लाह से डरने वाले मुसलमान सब से अच्छा और ईमानदार के मार्गदर्शन में रहें।

कोई मुशरिक[1] कुरैश के किसी व्यक्ति या उसकी सम्पत्ति की रक्षा को मंजूर नहीं करेगा। न ही दूसरे मुसलमान के बीच में पड़ेगा। जो

---

[1] मदीना के मूर्तिपूजकों की ओर इशारा है।

कोई किसी मुसलमान को बिना कानूनी कारण के जान से मार डालने का दोषी होगा उसे बदला हेतु वश में किया जाएगा या फिर जिसकी हत्या हुई है उसके रिश्तेदार (खून बहा) से संतुष्ट हो जाएं, और सभी मुसलमान उस एक आदमी के विरुद्ध होंगे, और सभी पर ज़रूरी है कि उसके ख़िलाफ़ कार्रवाई करे।

यह उस मुसलमान के लिए जायज़ नहीं होगा जो इस दस्तावेज़ को मानता है और अल्लाह और आख़िरत पर विश्वास रखता है, कि वह किसी बिदअती[1] को पनाह और सुरक्षा दे। अल्लाह की फटकार और क्रोध ऐसे लोगों पर क़यामत के दिन होगा जो उसका समर्थन करते और पनाह देते हैं, उसकी कोई तौबा कुबूल न होगी। जब तुम किसी बात में मतभेद पाओ तो अल्लाह और रसूल के हवाले कर दो।

यहूदी युद्ध की कीमत तब तक अदा करेंगे जब तक कि वे मुसलमानों के साथ मिलकर युद्ध करते हैं। बनू औफ़ के यहूदी मुसलमानों के साथ एक समुदाय हैं (मुसलमान अपने धर्म पर और यहूदी अपने धर्म पर हैं), उसके अतिरिक्त जो कि ग़लत व्यवहार करते हैं, कि वे किसी को घायल नहीं करते परन्तु अपनों को और अपने परिवार वालों को चोट पहुंचाते हैं। यही बात अननज्जार, अलहारिस के यहूदियों पर लागू है और बनू सादिया, बनू जुशम, बनु औस, बनू सालबा, और जाफ़ना, सालबा के ख़ानदान पर लागू है, कि वे सब एक दूसरे की

---

[1] बिदअती यानी वह व्यक्ति जो धार्मिक कार्यों में नए परिवर्तन करे, एक अपराधी या अत्याचारी।

तरह हैं। यहूदियों के मित्रों को अपनों ही के समान सम्मान दिया जायेगा। उनमें से कोई भी अल्लाह के रसूल की अनुमति के बिना युद्ध के लिए नहीं निकलेगा, परन्तु उन्हें अपने घाव के बदला लेने से रोका नहीं जायेगा। जो कोई किसी मनुष्य को बिना चेतावनी मार डालता है, तो वह स्वयं की और अपने ख़ानदान की हत्या करता है, हां तब जब उस के साथ ग़लत हुआ हो, कि अल्लाह उसे स्वीकार करेगा। मुस्लिम और यहूदी अपना-अपना ख़र्च सहन करें। हर कोई एक दूसरे की उस आदमी के विरुद्ध सहायता करे जो इस दस्तावेज़ के मानने वाले लोगों पर आक्रमण करता है। वे एक दूसरे से सलाह मशविरा करें, और वफ़ादारी बेवफ़ाई के विरुद्ध एक सुरक्षा है।

एक आदमी अपने मित्र की ग़लती का ज़िम्मेदार नहीं है। जिस के साथ ग़लत हुआ हो उसकी सहायता अवश्य की जाये। यहूदी युद्ध समाप्त होने तक उसकी क़ीमत अदा करें। इस दस्तावेज़ के लोगों के लिए यसरिब शरण होगा। एक अंजान जो सुरक्षा में है वह अपने मेज़बान के समान होगा यदि वह कोई अपराध नहीं करता है। एक महिला को उसके परिवार की अनुमति से ही सुरक्षा दी जायेगी। यदि कोई झगड़ा या मतभेद उत्पन्न करे तो उसे अल्लाह और उसके रसूल मुहम्मद के हवाले कर दिया जाये। अल्लाह स्वीकारता है जो परहेज़गारी और अच्छाई के सबसे निकट है। कुरैश (के मुशरिक) और उनकी सहायता करने वाले की सुरक्षा नहीं दी जायेगी। सम्बन्धित दल पर ज़रूरी है कि यसरिब के किसी आक्रमण के विरुद्ध एक दूसरे की सहायता करें। यदि उन्हें शांति बहाली के लिए कहा

जाता है तो उन्हें एसा करना चाहिए, और यदि वही मांग मुसलमानों से करते हैं, तो धर्म (दीन) की लड़ाई के मामले के अतिरिक्त, उसे पूरा किया जाएगा। प्रत्येक आदमी अपने पक्ष की ओर से सुरक्षा का अधिकार रखता है; अल-औस के यहूदी, उनके सहायक और वे स्वयं भी इस दस्तावेज़ के लोगों के साथ पूरी वफ़ादारी करंगे।

वफ़ादारी अपराध ओर अत्याचार के विरुद्ध सुरक्षा है, जो कोई कुछ करता है अपने लिए करता है। अल्लाह इस दस्तावेज़ को मंजूर करता है। यह दस्तावेज़ ग़लत करने वाले को और पापी की सुरक्षा नहीं करेगा।

यहूदियों ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पैग़म्बर के रूप में मानने से इनकार कर दिया। अरब के मदीना के अधिकतर लोग मुसलमान थे, जो अपने जीवन के सभी पहलुओं में उनको एक मात्र हाकिम मानते थे।

जब तक आदमी पूरे तौर पर बेसहारा न हो तब तक दूसरे से सहायता मांगने की आदत से पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बचाव की आदत दिलाते थे। वह अपने साथियों से अच्छाईयों, नैतिक खूबियों और नेक बदला जो धार्मिक कार्य और इबादत सम्बन्धी हैं, के बारे में बहुत बातें करते थे। वह सामने ऐसे मज़बूत सबूत लाते थे जो कि आप के ऊपर उतरता था, यहां से आप उनको उनकी ज़िम्मेदारियों के बारे में, जो इस्लाम देता है, सूचना देते थे, और साथ ही आप खूब सोचने और विचार करने पर अधिक ज़ोर देते थे।

नैतिकता को बढ़ाने और लोगों को नेक मूल्यों और आदर्शों में रंगने के लिए आप का यही तरीक़ा था, ताकि वे नैतिक गुणों के एक ऐसे नमूना बनें जिनकी आने वाली नस्ल नक़ल करें।

मदीना के प्रारम्भिक वर्षः

प्रथम वर्ष स्थापित होने में बीत गया। यद्यपि यसरिब का बहुसंख्यक मुसलमान था, पर उन में से कुछ ऐसे थे जिन्हें इस्लाम से कोई दिलचस्पी नहीं थी। चूंकि ये लोग मुसलमानों से कम संख्या में थे, अपने लिये स्वयं व्यवस्थित होने में लायक़ नहीं होने के कारण उन्हें उन लोगों के साथ मिल कर रहना पड़ता था, इसलिए इन के बहाने से मुसलमान बन कर उन के साथ मिल जाने के अतिरिक्त और कोई चारा न था। इस श्रेणी के लोगों को ढोंगी, पाखंडी (या मुनाफ़िक़) के नाम से जाना जाता है।

वे यहूदी जिनके लाभ इस्लाम से टकराते थे, उन में और पाखंडी या मुनाफ़िक़ीन में बहुत सी बातों में समानता थी, इसलिए उन लोगों ने इस्लाम के विरुद्ध साज़िश रचने में हाथ मिला लिया। कई अवसर पर ये पाखंडी या मुनाफ़िक़ीन अरब के मुशरिकों के विरुद्ध फ़ौजी मुहिम और युद्ध में भाग लेने से इंकार कर देते थे।

इसी बीच अल्लाह ने मुसलमानों को अपने शत्रुओं और निकट के मूर्तिपूजकों से लड़ने की अनुमति दी। यह अनुमति पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को लोगों से अल्लाह की बात पहुंचाने के आदेश देने के तेरह वर्ष बाद मिली।

लगभग अपने आने के एक वर्ष बाद, पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने पहले फ़ौजी मुहिम पर गये। आप ने अल-अबवा के लोगों पर प्रथम सैनिक अभियान किया। आप ने अल-अबवा के लोगों पर आक्रमण किया जो कुरैश की अगुवाई कर रहे थे। अल-अबवा के लोगों ने आप से अमन क़ायम कर ली और आप बिना मुक़ाबला मदीना वापस हो गये। इस के बाद अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम समय-समय पर मुहिम भेजते रहे, जिन में से कुछ की अगुवाई आप स्वयं करते थे।

रमज़ान के महीने, मार्च ६२४, में अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सुना कि उमैय्या ख़ानदान का सरदार अबू सुफ़यान तीस या चालीस आदमी के साथ कुरैश मक्का के मालदार काफ़िला के साथ सीरिया से आ रहे हैं। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुसलमानों को बुलाया और आप ३१३ आदमियों के साथ उनको रास्ते में रोकने गये।

अबू सुफ़यान ने यह जानते ही एक आदमी को कुरैश की ओर भेजा कि वह उन्हें खबर दे दें कि वे उनकी संपत्ति की रक्षा में आयें और बता दें कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और उनके साथी उन के काफ़िले के इंतज़ार में हैं। यह समाचार सुनते ही कुरैश, पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आप के साथियों से लड़ने के लिए रवाना हुए।

अबू सुफ़यान ने अलग रास्तों से चलकर मुसलमानों से बच निकलने का इंतज़ाम कर लिया था। जब उसने देखा कि उसने काफ़िले को

बचा लिया है, उसने कुरैश को सूचना दी कि वे मक्का लौट जायें, परन्तु उनके नेताओं ने इस से इंकार किया और युद्ध के लिए ज़ोर दिया और नौ सौ से एक हज़ार तक आदमी को लेकर वे आगे बढ़े और बद्र के निकट एक स्थान पर पहुंच कर वहां कैम्प किया। लड़ाई व्यक्तिगत रूप से प्रारम्भ हुई, लड़ाई भयंकर हो गई। कुरैश के नेता एक के बाद एक मारे जा रहे थे, उनके ७० लोग जो मारे गये उन में अबू जहल भी था, उनके ७० आदमी कैदी बनाए गये, जबकि मुसलमानों के १४ आदमी शहीद हुए। यह खुली कामयाबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पैग़म्बर होने का पाक सबूत था, और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपके साथी बहुत खुश थे।

जब पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शत्रुओं से लड़ाई समाप्त की तो आप ने मुशरिकों की लाशों को एक गढ़े में फेंक देने का आदेश दिया। जीत का समाचार मदीना के लोगों तक पहुंचा और वहां जश्न का माहौल था। अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आप के साथी मदीना क़ैदियों को लेकर पहुंचे जब कि कुरैश अपने मुर्दों पर रोते-पीटते पहुंचे। बहुत से कैदियों ने अपने लिए फ़िदया या छुड़ाई धन दिया या मक्का के उनके रिश्तेदारों ने उनके लिए भेजा।

बद्र की जीत ने मदीना में मुसलमानों के सब से कट्टर विरोधियों को कमज़ोर कर दिया यानी वे ढोंगी (मुनाफ़िक़ीन) या नाम के मुसलमान जिनके मित्र यहूदी थे। इस प्रकार बद्र की जीत ने

मुसलमानों को मज़बूत बना दिया बद्र की लड़ाई के बाद अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बनू क़ैनुका के यहूदियों को बाज़ार में बुलाया और उन से कहा:

"ऐ यहूदियों होशियार हो जाओ नहीं तो अल्लाह तुम पर ग़ज़ब उतारेगा. जिस प्रकार उसने कुरैश पर उतारा। इस्लाम कुबूल कर लो, तुम जानते हो कि मैं पैग़म्बर हूं जिसकी चर्चा तुम्हारे धार्मिक पुस्तकों में है।"

उन लोगों ने इसे मानने से साफ़ इंकार किया, उसी समय अल्लाह ने आप पर आयत प्रकट (वह्य) किया:

"कह दीजिए (ऐ मुहम्मद) इंकार करने वालों से तुम हराए जाओगे और जहन्नम की ओर जमा किये जाओगे जो बहुत बुरा ठिकाना है। तुम्हारे लिए सीख थी उन दो जमाअतों में जो मिलीं, एक जमाअत तो अल्लाह के रास्ते में लड़ रही थी। और दूसरा गुट इंकार करने वालों का था।" (सूरह आले-इमरान: ३:१२,१३)

बनू क़ैनुका प्रथम यहूदी थे जिन्होंने अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से किए गये वादा को तोड़ा। अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन का घेराव तब तक किया जब तक उन्हों ने बिना शर्त अपने आप को हवाला नहीं कर दिया।

जब कुरैश को बद्र में उन की हार ने परेशान किया तो उन लोगों ने अबू सुफ़यान के काफ़िले की बचत को उस मुहिम को माली मदद देने के लिए रखा जो मदीना के मुसलमानों से बद्र का बदला लेने के

लिए हो रहा था। अतः उन लोगों ने मक्का वालों और दूसरे मित्रों से मिल कर ६२५ ई. में सेना एकत्रित किया और ३००० लोगों के साथ मदीना की सीमा पर पहुंच गये।

जब अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन के चलने के बारे में सुना तो आप उन से मुक़ाबले के लिए निकले और अपनी ७०० सेना को उहुद पहाड़ी की एक घाटी में तैनात कर दिया। दूसरी सुबह मुश्रिकों ने हमला किया परन्तु मुस्लिम तीरअंदाजों द्वारा भारी हानि के साथ खदेड़ दिये गये। जब मुसलमानों ने पीछा किया, तो मुश्रिकों के घुड़सवारों ने तब किनारे से हमला किया जब तीरअंदाजों ने अपने स्थान को छोड़ दिया फ़लतः मुसलमान बड़ी संकट में घिर गये। कुछ लोगों ने एक क़िला बना दिया और उस में चले गये, परन्तु पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने और आप की साहसी सेना ने उहुद पहाड़ के ढलान भूमि को पाने का प्रबन्ध किया। वहां वे लोग मुश्रिकों के घुड़सवारों से महफ़ूज़ थे। मुश्रिकीन अपने ऊपर हानि के कारण अपने लाभ को उन पर दबाव बनाने हेतु भुनाने के लायक़ न थे अतः बिना देर किए वे सब घर लौट गये।

अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी फ़ौज के साथ मदीना पहुंचे। दूसरे दिन आप मुश्रिकों की खोज में गये जो स्वयं मुसलमानों पर वापसी की सोच रहे थे परन्तु अपनी ओर मुसलमानों के कूच करने के समाचार सुन कर दिल हार गये।

यद्यपि मुश्रिकों ने बहुत से मुसलमानों को शहीद कर दिया, परन्तु उहुद की लड़ाई ने उन्हें वह जीत नहीं दी जिसकी वे सब आशा कर रहे थे, न ही यह मुसलमानों को कमज़ोर करने वाली हार थी, यह केवल थोड़े समय के लिए सैनिक पलट वार था, और तुरन्त ही मुसलमानों ने अपना विश्वास और ऊंचा मोराल हासिल कर लिया।

उहुद की लड़ाई के दो वर्ष बाद मुसलमानों की स्थिति उन मुहिमों के माध्यम से मज़बूत हो गयी जिन का नेतृत्व अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम करते थे या वे करते थे जिन को आप मंजूरी देते थे। इस प्रकार की फ़ौजी कार्रवाईयाँ पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मिशन को फैलाने में सहायक और अन्य को मक्का के मुश्रिकों से मिलने में बाधक रहा।

आप ने जान से मारने की साज़िश करने वाले बनू नज़ीर के यहूदियों के विरूद्ध आक्रमण किया जिन्हें मदीना के मुनाफ़िकों द्वारा समर्थन के झूठे वादे से धोखा दिया गया था। वे लोग झुक गये और पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से विनती की कि वे उन की जान माफ़ कर दें और अपने साथ सम्भव सम्पत्ति लेकर हथियारों से खाली हो कर निकलने दें जिसे आप ने मान लिया।

हिजरत के पांचवें वर्ष, ६२७ ई., में यहूदियों की बड़ी संख्या जिन्होंने मुसलमानों के विरुद्ध एक दल बनाया था, वे मक्का के कुरैश के पास गये और मुसलमानों के विरुद्ध आक्रमण करने पर उन्हें साथ होने का प्रस्ताव दिया। कुरैश जिन्होंने मुसलमानों के हाथों अनेकों हानियां

और बेइज़्ज़ती उठायी थी, इस विचार का स्वागत किया और १०,००० लोगों की सेना संगठित की और फिर अबू सुफ़यान के नेतृत्व में इस आशा के साथ चले कि वे मुसलमानों को नष्ट कर देंगे।

जब अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस समाचार को सुना, तो आप ने मदीना के चारों ओर खाई खोदने का आदेश दिया और उस में मुसलमान जो एक साथ काम कर रहे थे उनके साहस को बढ़ाने के लिए आप स्वयं भी काम करते थे।

जब खाई की खुदाई हो गयी तो कुरैश पहुंचे और मदीना के बाहर कैम्प लगा लिया और मुसलमानों को पन्द्रह दिनों तक घेरे रहे। उनका खाई पार करने का प्रयास नाकाम रहा, और उनके घोड़ों का चारा कम होने लगा। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथियों ने अपने शत्रुओं के बीच दूरी को और भी भड़काया और बढ़ाया, वो लोग सफ़ल हुए और यहूदियों ने मक्का के मुश्रिकों से अपना सम्बन्ध तोड़ लिया, और ऐसा ही अरब के दूसरे क़बीलों ने किया।

बेसहारा घेराव के कई दिनों बाद, एक रात की ठंड हवा और वर्षा के कारण अबू सुफ़यान ने घर वापस जाने का फ़ैसला किया। उस ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उस स्थान से हटाने की आशा छोड़ दी कि जिन की स्थिति अब और अधिक मज़बूत हो गयी थी।

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुसलमानों को यह सूचना दी कि अब कुरैश इस वर्ष के बाद उन पर हमला नहीं करेगा, और अब

वे लोग कुरैश पर हमला करेंगे। और वास्तव में कुरैश ने उस के बाद कभी हमला नहीं किया। यह मुसलमान थे जिन्होंने कुरैश पर हमला किया जब उन लोगों ने मक्का जीत लिया। मदीना के मुनाफ़िक़ीन बहुत कोशिश कर रहे थे कि वे मदीना में इस्लामी हुकूमत क़ायम न होने दें। उन लोगों ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और मुसलमानों को उहुद की लड़ाई में छोड़ दिया और उन यहूदियों से मिल गये जिनका आख़िरी मक़सद मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपके साथियों को समाप्त कर देना था।

मुसलमानों के विरुद्ध मुआहदा करने वालों से मिल कर बनू कुरैज़ा के यहूदियों ने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ किए गये वादे को तोड़ लिया और अपने आप को वे एक ख़ौफ़नाक अन्त की ओर ले गये।

बनू कुरैज़ा पर हमला करने के छठे महीने में पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अरब के कई क़बीलों पर हमला किया।

युद्ध विरामः

हिजरत के छठे वर्ष, पश्चिमी कैलेण्डर के अनुसार ६२८ ई. में, पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उमरा करने का निर्णय लिया और अपने साथ मुहाजिरीन और अंसार को ले गये और आप ने अल-हुदैबिया नाम के स्थान पर कैम्प किया। कुरैश जिन को और अधिक बेइज़्ज़ती और जगहंसाई का डर था, उन्होंने निर्णय किया कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और उन के साथियों को मक्का

में प्रवेश नहीं करने दिया जाय, नहीं तो अरब के लोग कहेंगे कि मुसलमान ताकत के बल पर मक्का में प्रवेश कर गये। उन लोगों ने अपना एक प्रतिनिधि भेजा जो आप को उन के निर्णय से अवगत करा दे। कुछ देर बाद पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस्मान रज़ी अल्लाहु अन्हु को अपने दूत के रूप में मक्का भेजा। परन्तु तुरन्त ही यह अफ़वाह फैल गयी कि मुश्रिकों ने उन को जान से मार डाला। यह सुनकर अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने लोगों से मज़बूत रहने और बदला लेने का वादा लिया। यह वादा बैअत अल रिज़वान के नाम से जाना जाता है, क्योंकि अल्लाह ने उन लोगों के प्रति अपनी प्रसन्नता ज़ाहिर की जिन्होंने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से वादा किया। अफ़वाह गलत साबित हुई और कुरैश ने अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास एक प्रतिनिधिमण्डल शांति संधि के लिए भेजा। युद्ध की स्थिति ख़त्म कर दी गयी और मुसलमानों को अनुमति दी गयी कि वे आगामी वर्ष ६२९ को उमरा अदा करें।

अगरचे पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कुछ साथी कुरैश से मुढभेड़ की आशा कर रहे थे, उनके क्रमानुसार वापसी ने दिखा दिया कि मुसलमान अल्लाह और उसके संदेष्टा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेश का किस प्रकार पालन करने वाले थे। इस संधि ने लोगों को इस बात के चुनने की आज़ादी दी कि कौन मुसलमान रहना चाहता है या अपने को मात्र अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ पंक्ति में रखता है। इस बीच कुरैश की शक्ति

कमज़ोर हो रही थी। कई अहम लोग मदीना हिजरत कर गये थे और इस्लाम कुबूल कर कुरैश को और भी बेइज़्ज़त कर रहे थे।

अगरचे कुरैश शांति संधि से अपने काफिला की सुरक्षा हेतु बड़े प्रसन्न थे, परन्तु उन लोगों ने यह नहीं समझा कि इस संधि ने मुसलमानों की संख्या बढ़ाने में सहायता की है। संधि इस तरह थी:

यह संधि है जिस पर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम (कुरैश के प्रतिनिधि) सुहैल बिन अम्र के साथ राज़ी हुए। वे दस वर्षों तक के लिए युद्ध छोड़ने पर राज़ी हैं, जिस के दौरान लोग दुश्मनी के कार्यों से अलग रहेंगे इस शर्त पर कि कुरैश का कोई आदमी अपने गार्जियन की इजाज़त के बिना मुहम्मद के पास जाता है तो वह उसे वापस भेज देंगे, और यदि मुहम्मद के आदमी कुरैश के पास आते हैं तो वे लोग उसे वापस नहीं करेंगे। हम लोग एक दूसरे के ख़िलाफ़ दुश्मनी नहीं दिखायेंगे, और न ही गुप्त रूप से (एक-दूसरे के ख़िलाफ़) हमला या ग़लत विश्वास होगा। जो कोई मुहम्मद के साथ संधि में प्रवेश करना चाहता है वह ऐसा कर सकता है, और जो कोई कुरैश का साथ चाहता है वह ऐसा कर सकता है।''

उस के तुरन्त बाद खुज़ाआ कबीला अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की संधि के साथ हो गये जबकि बनू बक्र कुरैश के साथ चले गये।

कुरैश ने अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सूचित किया कि आप और आपके साथी इस वर्ष मक्का से अलग रहें और

आगामी वर्ष आयें और मक्का में केवल तीन दिन तक ठहरें। आपका सपने में स्वयं अल्लाह के घर में एक विजेता के रूप में प्रवेश करते हुए देखने के कारण पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथियों को मक्का के जीतने के प्रति कोई संदेह नहीं था। फिर भी जब उन लोगों ने शांति की बात-चीत देखी जो उन्हें महसूस हो रहा था कि, यह कुरैश के लिए ज़्यादा फ़ायदामंद है, तो वे लोग उदास हो गये। रास्ते से वापसी में अल्लाह ने आप पर सूरह अल-फ़त्ह (विजय) वह्य (प्रकट) की जो इस प्रकार शुरू होती है:

"हम ने आप को खुली जीत दी ताकि अल्लाह आप के पिछले और अगले गुनाहों को माफ़ कर दे, और अपनी मेहरबानी आप पर पूरा कर दे और आप को सीधे रास्ते पर चलाए।''
(सूरह अल-फ़त्ह, ४८:१,२)

तब अल्लाह ने यह ज़ाहिर किया कि वह उन लोगों से प्रसन्न हैं जिन्होंने उसके पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अहद (बैअत) किया। अल्लाह ने कहा:

"जो लोग आप से बैअत कर रहे हैं वास्तव में अल्लाह से बैअत कर रहे हैं। अल्लाह का हाथ उन लोगों के ऊपर है...''
(सूरह अल-फ़त्ह, ४८:१०)

बनू बक्र, जो कुरैश का मित्र था उसने खुज़ाअह कबीला के विरूद्ध हमला किया, जो कि अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मित्र थे, इस प्रकार उस ने युद्ध विराम का उल्लंघन किया, जिस बात ने अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को संधि भंग

करने की, सूचना देने के लिए प्रेरित किया। गुप्त तैयारी के बाद, अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक वर्ष बाद १०,००० लोगों के साथ मक्का चले। अबू सुफ़यान और मक्का के दूसरे नेता आप से आगे मिलने के लिए चले और क़ायदे के मुताबिक़ गुज़ारिश की। अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आम माफ़ी का वादा दिया। जब आप ने मक्का में प्रवेश किया, तो हक़ीक़त में वहाँ बदला नहीं लिया। मात्र दो मुस्लिम और २८ मुश्रिक मारे गये, बहुत सारे लोग ऐसे थे जो मुसलमानों के प्रति अपराधी और अत्याचारी थे उन्हें ख़ास तौर से इस माफ़ी से अलग कर दिया गया, परन्तु उन में भी कुछ लोगों को माफ़ कर दिया गया। इस प्रकार अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिन्होंने मक्का को एक सताए पैग़म्बर के रूप में छोड़ा था, न केवल सफ़लता के साथ प्रवेश किया बल्कि मक्का के अधिकतर लोगों की राज भक्ति प्राप्त कर ली। यद्यपि आप ने उन को मुसलमान हो जाने के लिए विवश नहीं किया फिर भी अकसर ने ऐसा ही किया।

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अलग-अलग हुकूमत के मामलों को ठीक करने के क्रम में मक्का में १८ दिन बिताये। काबा मूर्तियों से साफ़ कर दिया गया और यही हालत बाकी मक्का की थी।

मक्का की जीत के बाद, हुनैन की लड़ाई हुई जिसके दौरान एक खूंखार दुश्मन अन्ततः मारा गया। अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और मुसलमान सभी अच्छे ढंग से अरब प्रायदीप में

स्थापित हो गये; अधिकतर क़बीलों ने अपना आदमी मदीना भेज कर इस्लाम क़बूल किया।

आप के साथी जो पहले वर्ष बिना उमरा किये लौटने के कारण दुखी थे, अब वे हुदैबिया में की गयी शांति संधि की अक़्लमंदी को समझने देखने के लायक थे। यही वह समय था जब लोग इस्लाम में समूह में आने लगें, उन लोगों ने युद्ध विराम की ताकत की ख़ूब तारीफ़ की।

सीरत (नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जीवनी) के मशहूर टीकाकार इमाम ज़ोहरी ने इस बड़ी घटना पर यह कहते हुए टिप्पणी की:

इस्लाम में इस से बड़ी जीत नहीं थी। जब लोग मिले तब वहां युद्ध के सिवा कोई चारा न था परन्तु जब युद्ध विराम हुआ तो लड़ाई रुक गयी, लोग सुरक्षा के एहसास के साथ मिलते थे। कोई अब ऐसा नहीं था जिस से इस्लाम की व्याख्या नहीं की गयी हो और उसने इस्लाम को गले न लगाया हो। उन दो वर्षों में इस्लाम में प्रवेश करने वालों की संख्या पहले से दुगनी या कई गुना बढ़ चुकी थी।''

इब्ने हिशाम, सीरत के लिखने वाले, ने भी ज़ोहरी की बात की ताईद की: 'अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम १४०० लोगों के साथ हुदैबिया गये, फ़िर मक्का की जीत के समय दो साल बाद आप १०,००० लोगों के साथ वहां गये।''[1]

---

[1] सीरत इब्न हिशाम, भाग ३, पेज ३३।

अलविदाई हज

वर्ष ६३२ ई में, पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज करने की तैयारी की और लोगों को आदेश दिया कि वे उन के साथ चलने के लिए तैयार रहें। कहा जाता है कि ७०,००० से लेकर १००,००० लोगों ने आप के साथ हज अदा किया। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस अवसर पर एक खुतबा (प्रवचन) दिया जो अलविदाई खुतबा के नाम से जाना जाता है। आप ने अपनी बात इन शब्दों से आरम्भ की:

"ऐ लोगों मुझे ध्यान से सुनो! बेशक तुम्हारा खून और तुम्हारी सम्पत्ति, तुम्हारे इस दिन के समान, तुम्हारे इस महीने में, तुम्हारे इस शहर में, पाक और इज्ज़त के लायक है। अज्ञानता के दिन से सम्बन्धित सभी बातें मेरे इस पांव के नीचे पूरे तौर पर समाप्त कर दी गयी हैं। पहला खून का वह बदला, जो मैं समाप्त करता हूँ, वह है जो रबीआ बिन हारिस के पुत्र का है, जो साद क़बीले में रहता था और हुज़ैल के द्वारा मारा गया था। और इस्लाम से पहले के सूद व्यवस्था को समाप्त किया जाता है, और पहला सूद जो मैं समाप्त करता हूँ, वह है जो अब्बास बिन अब्दुल मत्तलिब का है।

"महिलाओं के सम्बन्ध में अल्लाह से डरो। बेशक तुम ने उन्हें अल्लाह की रक्षा से लिया है, और उनके साथ सम्बन्ध अल्लाह के शब्दों के द्वारा जाएज़ हुआ है। उन के ऊपर तुम्हारे अधिकार हैं और ये कि वे ऐसे लोगों को तुम्हारे बिस्तर पर न बैठने दें जिन्हें तुम पसन्द नहीं करते हो। परन्तु वे ऐसा करती हैं, तो तुम उन्हें मारो

परन्तु कठोरता से मत मारो। उनका अधिकार तुम्हारे ऊपर यह है कि तुम अच्छे ढंग से उनके खाने और पहनने का प्रबन्ध करो। मैं ने तुम्हारे बीच अल्लाह की किताब छोड़ी है, यदि तुम ने उसे मज़बूती से पकड़ा तो तुम कभी गुमराह नहीं होगो। और तुम से मेरे बारे में (क़यामत के दिन) पूछा जायेगा, (अब मुझे बताओ) तुम क्या कहोगे? उन लोगों (सुनने वालों) ने कहा: "हम लोग गवाही देंगे कि आपने (पैग़ाम) पहुंचा दिया, (पैग़म्बर होने का) कर्तव्य पूरे तौर पर अदा किया और हमें अच्छी सलाह दी।"

उस (बयान करने वाले) ने कहा: "आप (पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने अपनी उंगली आकाश की ओर उठाई और लोगों की ओर इशारा करते हुए (कहा): 'ऐ अल्लाह! गवाह रह। ऐ अल्लाह गवाह रह,'' आपने ऐसा तीन बार कहा। (सहीह मुस्लिम, हज की किताब १४७)

समय अपना असली रूप ले चुका है जब अल्लाह ने आसमान और ज़मीन को पैदा किया। वर्ष बारह माह के हैं, जिन में चार पाक हैं, इन चारों में से तीन तो लगातार हैं, यानी, ज़ुलक़ादा, ज़ुलहिज्जा और मुहर्रम और चौथा रजब है, जो जुमादा और शाबान माह के बीच में है।"

फिर आप ने एक ख़ुत्बा १० ज़ुलहिज्जा को दिया जिसमें आप ने पूछा, यह कौन सा महीना है? हम लोगों ने उत्तर दिया कि अल्लाह और उसके पैग़म्बर अधिक जानते हैं।'' उस पर पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इतनी देर तक शांत रहे कि हमने सोचा कि आप इस

का कोई दूसरा नाम बतायेंगे। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "क्या यह जुलहिज्जा का महीना नहीं है?" हम लोगों ने उत्तर दिया जी हाँ (यह है)।" फिर आप ने पूछा, "यह कौन सा शहर है?" हम लोगों ने उत्तर दिया कि अल्लाह और उसके पैग़म्बर अधिक जानते हैं"। आप इतनी देर तक शांत रहे कि हमने सोचा कि शायद आप इस का दूसरा कोई नाम बतायेंगे। फिर आप ने फ़रमाया, "क्या यह नहर (यानी कुर्बानी) का दिन नहीं है?" हम लोगों ने उत्तर दिया, जी हाँ (यह है)" आप ने फ़रमाया:

अत: तुम्हारा खून और तुम्हारी दौलत और तुम्हारी इज़्ज़त एक दूसरे के लिए हराम है तुम्हारे इस दिन की हुरमत के समान, तुम्हारे इस शहर के समान, तुम्हारे इस महीने के समान। बेशक तुम सब अपने मालिक से मिलोगो, और वह तुम से तुम्हारे कर्मों के सम्बन्ध में पूछेगा। सावधान रहो! तुम लोग उन लोगों के समान मत हो जाना जो मेरे बाद गुमराह (काफ़िरों के समान) हो गये, कि एक दूसरे की गर्दन काटने लगो। जो लोग यहाँ मौजूद हैं उनकी यह ज़िम्मेदारी है कि वे इन बातों को उन तक पहुंचा दें जो ग़ायब हैं। सम्भव है कि उन में से कुछ लोग ऐसे हों जिन से यह बातें कही जायें वह उन मौजूद सुनने वालों से अधिक इन बातों को समझने वाले और याद रखने वाले हों"।

दूसरे बयान करने वाले, इस बयान को याद करते हुए कहते थे, "मुहम्मद ने सत्य कहा!" उन्हों ने (यानी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम) फिर दोबारा कहा, "बेशक! क्या मैंने (अल्लाह के पैग़ाम को) तुम तक नहीं पहुंचा दिया? (सहीह अल बुखारी : ४४०६)

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने लोगों से हज की विधि और तरीके बताते हुए हज को पूरा किया। मदीना पहुंचने के कुछ ही दिन बाद आप ने सीरिया एक सेना भेजी।

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना इस स्थिति में वापस हुए कि आप इस बात से सचेत थे कि अब अपने मिशन के पड़ाव पर हैं, अतः आप अधिकतर समय अल्लाह की प्रशंसा में बिताते थे जिसने पैग़म्बर बनने के तईस वर्षों के दौरान सफ़लता पर सफ़लता दी। लोग बड़े समूह में इस्लाम में प्रवेश कर रहे थे, और कई शिष्टमण्डल लगातार आपके पास आते रहे।

उसी समय, अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अरब और ग़ैर-अरब राजाओं के पास उन्हें इस्लाम स्वीकार करने का निमंत्रण देने हेतु दूतों को भेजा, जब कि फ़ौजी मुहिम लगातार जारी रहा। इसी बीच पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बीमार रहने लगे जिस के शिकार आप अलविदाई हज से लौटने के चार माह बाद हुए।

रबीउल अव्वल ग्यारह हिजरी में पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सात सौ सिपाहियों के साथ उसामा बिन ज़ैद रज़ी अल्लाहु अन्हु को फ़िलस्तीन में दरूम और बलका के क्षेत्र में भेजा। उन्हें रूमियों के मुकाबले अपनी शक्ति दर्शाने के लिए भेजा गया था, जो अपनी शत्रुता भरी कार्यवाही लगातार कर रहे थे। सेना प्रस्थान कर गयी,

परन्तु जब वह मदीना से मात्र तीन मील दूर थी कि उसे पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बहुत बीमार होने का समाचार मिला। उन लोगों ने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के स्वास्थ्य से सम्बन्ध अधिक समाचार प्राप्त करने के लिए, वहीं कैम्प लगा कर इंतज़ार करने लगे। पैग़म्बर की मृत्यु के बाद, उस्मान रज़ी अल्लाहु अन्हु और उनके साथी अपने मुहिम पर गये और ख़लीफ़ा हज़रत अबू बक्र सिद्दीक रज़ी अल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त में सेना मुहिम के नेतृत्व करने वाले प्रथम व्यक्ति बने।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मौत की निशानियां

अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मृत्यु मुसलमानों के लिए बहुत बड़ी मुसीबत थी। जब मृत्यु की पीड़ा शुरू हुई, तो पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शक्ति कमज़ोर होने लगी। आप की पत्नी हज़रत आएशा रज़ी अल्लाहु अन्हा आप को पकड़े थी। उसी समय हज़रत आएशा के भाई अब्दुर्रहमान कमरे में प्रवेश करते हैं जिनके हाथ में एक मिसवाक थी जिस से आप दांत साफ़ करते थे। आएशा रज़ी अल्लाहु अन्हा ने देखा कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मिसवाक की ओर देख रहे हैं, अतः उन्होंने आप से पूछा कि क्या आप मिसवाक चाहते हैं, और आप ने अपना सिर हिलाया। उन्होंने मिसवाक लिया और उसके एक किनारे को चबा कर नरम करने के बाद आप को दे दिया।

पानी का एक प्याला पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निकट रख दिया गया था। आप अपने दोनों हाथ उस पानी में डालते थे

और अपने चेहरे पर उसके छींटे मारते हुए कहते थे "अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, हक़ीक़त में यह सब मौत की पीड़ायें हैं।"

आप ने या तो अपना हाथ उठाया या अपनी गवाही वाली उंगली से आकाश की ओर संकेत किया। आप की आवाज़ कमज़ोर थी, परन्तु हज़रत आएशा रज़ी अल्लाहु अन्हा आप की आवाज़ सुन सकती थीं, आप ने अपनी आंख ऊपर उठाई और तीन बार यह दोहराया:

"उन पैग़म्बरों, सच्चे लोगों, शहीदों और नेक लोगों के साथ जिन्हें तू ने पुरस्कार से नवाज़ा। ऐ अल्लाह तू मुझे माफ़ कर दे मुझ पर दया कर और मुझे रफ़ीक़ आला में पहुंचा दे। ऐ अल्लाह रफ़ीक़ आला"।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मौत पर साथियों की चिन्ता:

मदीना में यह दुखद समाचार तुरन्त ही सभों को मिल गया। मदीना के सभी क्षेत्र में शोक का अंधकार फैल गया। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के एक साथी हज़रत अनस रज़ी अल्लाहु अन्हु ने कहा: जिस दिन अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमारे बीच आए उस से अच्छा और सुन्दर दिन मैंने अपने पूरे जीवन में कभी नहीं देखा; और जिस दिन अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मृत्यु हुई उस से अधिक भयंकर या अंधकार वाला दिन मैं ने कभी नहीं देखा।

जब आप की मृत्यु हो गयी तो आप की पुत्री फ़ातमा रज़ी अल्लाहु अन्हा ने कहा:

"हाय अब्बाजान, जिन्होंने अल्लाह की पुकार का जवाब दिया। हाय अब्बा जान जिनका ठिकाना जन्नत है। हाय अब्बाजान, हम जिब्रील अलैहिस्सलाम को आप की मृत्यु का समाचार देते हैं''। (सहीह बुख़ारी, २/६४१)

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आगमन की बाईबल की भविष्यवाणीः

जौन १४:१५-१६...

"यदि तुम मुझ से प्रेम करते हो, तो मेरी आज्ञा का पालन करो। और मैं पिता से दुआ करूँगा और वह तुम को दूसरा तसल्ली देने वाला देगा कि वह सदा तुम्हारे साथ रहेगा''।

मुस्लिम उलमा बाताते हैं कि "दूसरा तसल्ली देने वाला'' अल्लाह के पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं; और उन के "सदा रहने'' का अर्थ है कि आप का क़ानून और आप की जीवनी (सीरत) और कुरआन जो आप पर प्रकट किया गया था, वह हमेशा रहेगा।

जौन १५:१६-२७...

"परन्तु जब तसल्ली देने वाले आयें, जिनको मैं पिता की ओर से तुम्हारे पास भेजूंगा, वह मेरा गवाह होंगे: और तुम लोग भी गवाह होगे, तुम मेरे साथ शुरू से रहोगे।'

जौन १६:५-८....

“परन्तु अब मैं उन के मार्ग को जाता हूँ जिस ने मुझको भेजा और तुम में से कोई मुझ से न पूछे कि “आप कहां जाते हैं?” क्योंकि मैं ने तुम को यह सब बातें बता दी हैं, दुःख तुम्हारे दिल में भर चुका है। जो भी हो मैं ने तुम को सत्य बता दिया; यदि मैं नहीं जाता हूँ तो वह तसल्ली देने वाला तुम्हारे पास नहीं आएगा; परन्तु यदि मैं प्रस्थान करता हूँ, तो मैं उनको तुम्हारी ओर भेजूंगा। और जब वह आयेंगे तो वह पाप की दुनिया को झिड़की देंगे और सदाचार और न्याय क़ायम करेंगे।”

जौन १६:१२-१४...

मुझे तुम लोगों से बहुत कुछ कहना है, परन्तु तुम उन्हें अभी सहन नहीं कर पाओगे। यह तब होगा जब वह सत्य की आत्मा आयेगी, वह तुम लोगों को सभी सत्य में रास्ता दिखाएंगे: क्योंकि वह खुद नहीं बोलेंगे; परन्तु जो कुछ वह सुनेंगे, वही बोलेंगे; और वह तुम को आने वाली चीज़ें दिखायेंगे। वह मेरी तारीफ़ और आदर करेंगे, वह मेरी बातों को लेंगे और वह इसे तुम्हें दिखाएंगे।”

जौन १६:१६...

“और थोड़ी देर के लिए तुम लोग मुझे नहीं देखोगे, और फिर थोड़ा देर के लिए मुझे देखोगे, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूँ”।

मुस्लिम आलिमों ने बताया है कि उस व्यक्ति के सम्बन्ध में जो ईसा मसीह ने उक्त श्लोकों में अपने बाद आने की बात की है, अल्लाह के पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अधिक किसी और

दूसरे व्यक्ति से मेल नहीं खाता है। वह "व्यक्ति'' जिनके सम्बन्ध में मसीह ने अपने बाद आने की भविष्यवाणी की है, उन्हें बाईबल में "फारकलीत'' कहा गया है। बाद में इस शब्द को व्याख्याताओं और अनुवादकों के द्वारा हटा दिया गया और कभी इसे "सत्य की आत्मा'' से तो कभी " तसल्ली देने वाला'' से और कभी "पाक आत्मा'' से बदल दिया गया। मूल रूप से यह यूनानी शब्द है और इसका अर्थ है "ऐसा व्यक्ति जिनकी लोग बहुत तारीफ़ करते हों''। अरबी भाषा के शब्द "मुहम्मद'' का भी यही अर्थ है।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का रूप और चरित्र

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शरीरिक रूप और बनावट को उनके साथियों द्वारा तफ़सील से बताया गया है:

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का चेहराः

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का चेहरा सुन्दर, आकर्षक और गोल था। जब कभी आप खुश होते, आपका चेहरा पूरे चाँद के समान चमकता था परन्तु जब आप गुस्से में होते तो यह बिल्कुल लाल हो जाता।

अलबरा रज़ी अल्लाहु अन्हु ने कहा आपका चेहरा सबसे सुन्दर था और चरित्र सबसे उच्च कोटी का था''। जब उन से प्रश्न हुआ "क्या पैग़म्बर का चेहरा तलवार के समान था?'' उन्होंने कहा "नहीं'' "यह चाँद के समान था।''

दूसरी रिवायत में उन्हों ने कहा: "आप का चेहरा गोल था।" रुबय्ये बिन्ते मुअव्विज़ रज़ी अल्लाहु अन्हा ने कहा: "तुम यदि उन को देखते, तो तुम को महसूस होता कि सूर्य चमक रहा है"। जाबिर बिन समुरा रज़ी अल्लाहु अन्हु ने कहा: "मैंने आप को एक बार पूरी चाँदनी में देखा। मैंने उन्हें दोबारा देखा। आप लाल रंग की पोशाक पहने थे। मैंने आप की तुलना चाँद से की और पाया कि,- मेरे लिए- आप चाँद से कहीं बेहतर हैं।" (मिशकातुल मसाबीह २:५१८)

यदि पसीना आपके चेहरे पर आता, तो उसकी बूंद मोतियों के समान चमकती थी, और आप के पसीना निकलने की खुश्बू मुश्क के समान होती थी।"

पैग़म्बर के गाल बड़े मुलायम थे, आप का मस्तक चौड़ा था और आपके भौंह तीर के समान पतले थे। आपकी आंखें बड़ी-बड़ी थीं, आंख की पुतली काली थी, जबकि उजले रंग लाल रंग से मिल गये थे। आप की आंख की भंवें मोटी थीं।

आप की नाक ऊंची थी। आप का मुंह चौड़ा था आप के प्रत्येक दांत के बीच जगह थी। आप के दांत चमकीले थे, जब आप मुस्कुराते थे तो उस समय आप के दांत ओले के पत्थर के समान चमकते थे और जब बात करते थे तो यह दांत चमकते थे।

पैग़म्बर की दाढ़ी काली, मोटी और घनी थी जो आपके सीने के अधिकतर भाग को घेरे रहती थी। कुछ ही भूरे बाल आप की ठोड़ी और कान पर चमकते दिखाई देते थे।

सिर, गर्दन और बालः

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की गर्दन लम्बी और सिर बड़ा था। आप के बाल थोड़े घुंघराले थे, और आप इसे बीच से फ़ाड़ते थे। कभी-कभी आप इतने लम्बे बाल रखते थे कि वह दोनों कंधों को छूते थे, जबकि कभी-कभी कान से थोड़ा और कभी थोड़ा नीचे लटकता था। आप के मस्तक पर कुछ भूरे बाल थे, परन्तु आप के सिर और दाढ़ी में एक साथ बीस से अधिक भूरे बाल न थे।

हाथ पैरः

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बड़ी हड्डियों वाले थे जिनकी कोहनियां, कंधे, घुटने और कलाईयां बड़ी थीं। आप की हथेली और पैर चौड़े थे। आप की बांहें भारी और बाल वाली थीं, और आप की एड़ियां और पेण्डुली हलकी थी। आप के कंधे चौड़े रोवों से भरे थे, परन्तु आप का सीना चौड़ा और बाल वाला था, केवल बालों की एक लकीर थी जो सीने से नाभि तक निकलती थी।

बनावट और डील-डोलः

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम औसत दर्जे की बनावट के थे, न बहुत मोटे और न दुबले थे। आप का शरीर सीधा था। अगरचे आप ख़ास लम्बे नहीं थे, आप अधिकतर लोगों से ऊंचाई में ऊपर और बड़े थे।

सुगन्धः

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कई साथियों ने एक सुगन्ध जो

किसी भी खुश्बू से अधिक सुगन्धित थी, की चर्चा की है, जो आप के शरीर से निकलती रहती थी। अनस रज़ी अल्लाहु अन्हु ने कहा, "मैंने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खुश्बू से अधिक सुगंन्धित किसी खुश्बू को कभी नहीं सूंघा।'' जाबिर रज़ी अल्लाहु अन्हु ने कहा: "पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खुश्बू आप के जाने के बाद बहुत देर तक रहती थी, और नाक से हवा खींच कर हम बता सकते थे कि आप किस रास्ते की ओर गये हैं।'' यदि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम किसी से हाथ मिलाते, तो उस आदमी के साथ आप की खुश्बू पूरे दिन बाक़ी रहती थी। जब कभी आप अपना हाथ किसी बच्चे के सिर पर रखते तो दूसरे लोग बच्चे पर आपकी खुश्बू को पहचान लेते थे। उम्मे सुलैम रज़ी अल्लाहु अन्हा पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पसीने को एक बोतल में जमा किया करती थी और इसे खुश्बू में मिला दिया करती थी।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की चाल:

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तेज़ चलने वाले और मज़बूत कदम वाले थे। आप तेज़ी से ऊपर चढ़ते थे और तेज़ी परन्तु नरमी के साथ उतरते थे, जैसे कि आप ढालदार जमीन पर उतर रहे हों। आप तेज़ी और सुन्दरता से मुड़ते थे। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब चलते थे तो कभी थकते नहीं थे और कोई भी आप से रफ़्तार में मुक़ाबला नहीं कर सकता था। अबु हुरैरा रज़ी अल्लाहु अन्हु ने कहा: "मैंने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अधिक तेज़ी से चलने वाला किसी को नहीं देखा। जब आप चलते थे तो

मालूम होता कि ज़मीन आप के लिए गोल कर दी गयी है। जब हम आप के साथ चलते तो हम थक जाते, जबकि आप आसानी से चलते रहते।''

आवाज़ और बोली:

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आवाज़ थोड़ी ऊंची थी, आप की बोली अच्छा बयान करने वाली थी। आप जब-जब शांत होते तो बहुत अच्छे लगते और जब बोलते तो आकर्षित लगते। आप सदा मुख्य विषय बोलते, और आप के शब्द स्पष्ट और अलग होते। बिल्कुल स्वाभाविक रूप से आप मज़बूत बयान करने वाले थे।

आप अरबी भाषा में पूरे माहिर थे और हर एक क़बीले की बोली और आवाज़ से वाक़िफ़ थे जो आप से जिस बोली और आवाज़ में बात करता आप उस से उसी में बात करते। आप बदवी और शहरी दोनों बोली में माहिर थे। इसीलिए आप में बहुतों की बोली के बोलने की शक्ति थी साथ ही शहरी बोली की सुन्दरता भी थी। इन सब के अलावा, अल्लाह की सहायता कुरआन के प्रकट श्लोकों में मिली हुई थी।

चरित्र :

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आम तौर पर खुश दिखाई देते और मुस्कुराते मालूम होते थे। यदि आप के प्रति कोई असभ्य होता, तो आप कठोर और असभ्य नहीं होते, आप को जितना दुख दिया जाता आप उतना ही नम्र और शांत होते। आप के विरुद्ध जो जितनी

अज्ञानता और जिहालत से पेश आता, आप उतना ही नरम होते। आप अपनी आवाज़ कभी भी बाज़ार में बुलन्द नहीं करते।

यदि आप को दो विकल्प दिया जाता, तो पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सदैव अधिक आसान को चुनते, और यह तब जब वह किसी पाप की ओर नहीं ले जाता। इस सब के अलावा आप सदा गुनाहों स या ऐसी चीज़ से जो अल्लाह की नाफ़रमानी की ओर ले जाने वाली होती उन से बचते थे। आप के विरुद्ध यदि कोई अपराध होता तो आप कभी उस से बदला नहीं लेते, परन्तु जब अल्लाह के सम्मान की अवहेलना होती तो आप निश्चित रूप से अपराधी को दण्डित करते। आप का साहस, आप का समर्थन और आप की शक्ति बेमिसाल थी। आप सब से अधिक साहसी थे। आप ने अनेकों कठिन समय को देखा परन्तु उन में आप स्थिर और मज़बूत रहे। कई बार ऐसा हुआ कि बहादुर और साहसी लोग आप को अकेले छोड़ भाग जाते; फिर भी आप हिम्मत के साथ पीठ दिखाए बिना शत्रुओं का सामना करते, आप के सिवा सभी बहादुर लोगों को एक बार भागना पड़ा था या फिर उन्हें युद्ध के मैदान से खदेड़ दिया गया था। हज़रत अली रज़ी अल्लाहु अन्हु ने कहा:

> "जब कभी लड़ाई भयंकर रूप लेती और लड़ाई करने वालों की आँखें लाल हो जातीं, तो हम लोग पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास समर्थन वास्ते मदद के लिए जाते। आप सदा ही शत्रुओं से सब से निकट होते थे।'' (अश-शिफ़ा १:८९)

हज़रत अनस रज़ी अल्लाहु अन्हु ने कहा:

एक रात मदीना के लोगों को ख़तरा महसूस हुआ। लोग जल्दी से आवाज़ के स्रोत की ओर गये, परन्तु पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उन सब से पहले ही आगे चले गये थे। आप अबू तलहा के घोड़े पर सवार थे जिस पर कोई ज़ीन नहीं था, और तलवार आप के गर्दन में लटकी थी, और आप ने उन से कहा- "डरने की कोई बात नहीं है।" (बुख़ारी १:४०७)

आप सब से अधिक शर्मिले थे और अपनी आंखें नीची रखने वाले थे। अबु सईद अल-खुदरी रज़ी अल्लाहु ने कहा:

> "दुल्हन वाले कमरे की कुमारी कन्या से अधिक शर्माने वाले थे। जब कभी आप किसी चीज़ के प्रति नफ़रत करते तो हम उसे आप के चेहरे पर पढ़ लेते।" (सहीह अल-बुखारी, १:५०४)

आप किसी के चेहरे पर घूर कर नहीं देखते। सदैव आप अपनी आँखें नीची रखते थे। आप ऊपर से अधिक नीचे की ओर देखते थे। आप किसी पर बहुत अधिक देखते तो एक झलक उसे देखते। प्रत्येक आदमी चाहते हुए या लजाते हुए आप की आज्ञा का पालन करता। आप उस आदमी का नाम कभी नहीं लेते जिनके बारे में आप ऐसी बुरी बात सुनते जिस से आप घृणा करते। उसकी बजाये आप कहते: "क्यों कुछ लोग ऐसा और वैसा करते हैं।"

आप अपने सेवक को कभी नहीं डांटते थे, न ही आप से किसी के सम्बन्ध में ग़लत कहते हुए सुना गया।

ग़रीब और लाचार को देखना और उन्हें खुश करना आप की कुछ आदतों में से एक आदत थी। यदि कोई गुलाम आप को दावत देता तो आप उसे क़बूल करते।

आप सदा अपने मित्रों के बीच सामान्य आदमी के समान बैठते थे। आएशा रज़ी अल्लाह अन्हा ने कहा कि आप अपना जूता खुद मरम्मत करते थे, अपना कपड़ा स्वयं सीते थे और वह काम भी करते थे जो सामान्य साधारण व्यक्ति अपने घरों में करते हैं। इस सब के अलावा, आप दूसरों के समान ही एक आदमी थे। आप अपने कपड़ों को चेक करते थे (कि कहीं इस में कीड़े आदि तो नहीं?)। अपनी बकरी से स्वयं दूध दुहना और स्वयं खाने का प्रबन्ध करना आप के सामान्य कामों में से था। (मिशकात अल-मसाबीह २:५२१)

अल्लाह के रसूल होने से पहले भी, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल-अमीन के नाम से जाने जाते थे। आप लोगों के प्रति सब से अधिक मेहरबान और उनके विश्वास के प्रति सब से अधिक सचेत थे और लोगों को उनका बक़ाया पूरे तौर पर अदा करने में बड़े सचेत रहते थे। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सब से अधिक उत्तरदाता और सबसे विनम्र साथी थे, बिना कल्पना किए कोई आप को देख कर डर जाता और आप का सम्मान करता। जो आप से परिचित या आप को पसन्द करता था। उनके सम्बन्ध में किसी ने कहा:

"उनके देखने के पश्चात मैंने आप जैसे व्यक्ति का न तो आप से पहले किसी को देखा और न आप के बाद देखा''। (बुख़ारी, १:५०३)

पैग़म्बर का परिवारः

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ग्यारह या बारह पत्नियां थीं, जिन में से नौ आप की मृत्यु के समय जीवित थीं। मुसलमानों की माताओं से सम्बन्ध उनका एक संक्षित विवरण नीचे दिया गया है:

1. खदीजा बिन्त खुवैलिद रज़ी अल्लाहु अन्हाः

जब आप पचीस वर्ष के थे तो आप ने उन से विवाह किया। इब्राहीम को छोड़ आप के सभी बच्चे इन्हीं से हुए थे, और जब तक वह जीवित थीं आप की एक मात्र पत्नी थी। उनकी मृत्यु ६५ वर्ष की आयु में रमज़ान मास में हुई, पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपना मिशन आरम्भ किये तब दस वर्ष बीत चुके थे। उन को हजून में दफ़नाया गया।

2. सौदह बिन्त ज़मआ रज़ी अल्लाहु अन्हाः

इनका विवाह पहले अपने चचेरे भाई सकरान बिन अम्र से हुआ था। इस जोड़े ने इस्लाम को गले लगाया और अबी सीनीया (हब्शा) पलायन कर गया। मक्का वापसी में सकरान की मृत्यु हो गयी। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सौदह से, हज़रत ख़दीजा रज़ी अल्लाहु अन्हा की मृत्यु के एक माह बाद, शौव्वाल में विवाह किया। उनकी मृत्यु हिजरत के बाद ५४ में हुई।

3. आएशा सिद्दीक़ा बिन्त अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ी अल्लाहु अन्हाः

सौदह से विवाह के एक वर्ष बाद, पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन से शौव्वाल के महीने में विवाह किया। आएशा रज़ी अल्लाहु

अन्हा एक मात्र कुमारी कन्या थीं जिन से पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने विवाह किया था और पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पत्नियों में सब से प्रिय जानी जाती थीं। मुस्लिम न्यायशास्त्री के इतिहास में वह सबसे पढ़ी-लिखी महिला थीं। उनकी मृत्यु १७ रमज़ान, ५७ हिजरी को हुई, और उन्हें बकी में दफ़नाया गया।

4. हफ़सा बिन्त उमर बिन्त ख़त्ताब रज़ी अल्लाहु अन्हाः

उनकी शादी खुनैस बिन हुज़ाफ़ा से हुई थी, जो बद्र की लड़ाई में लगे एक घाव के कारण मर गये। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन से शाबान ३ हिजरी में उन के शोक से निकलने के बाद विवाह किया। उनकी मृत्यु शाबान ४५ हिजरी में, ६० वर्ष की आयु में हुई, और बक़ी में दफ़नाई गयीं।

5. ज़ैनब बिन्त खुज़ैमा रज़ी अल्लाहु अन्हाः

वह उबैदा बिन हारिस की विधवा थीं, जो बद्र की लड़ाई में शहीद हो गये थे। दूसरे कुछ लोगों के कहने के मुताबिक़ उनका विवाह अब्दुल्लाह बिन जह्श रज़ी अल्लाहु अन्हु से हुआ था जो उहुद की लड़ाई में शहीद हुए थे। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन से ४ हिजरी में विवाह किया। अज्ञानता के दिनों में वह उम्मुल-मसाकीन (ग़रीबों की माता) के नाम से, उनकी अपनी गरीबों के प्रति मेहरबानी के कारण, जानी जाती थीं। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से शादी के आठ माह बाद रबीउल आख़िर ४ हिजरी को उनकी मृत्यु हो गयी।

6. उम्मे सलमा, या हिन्द बिन्त उमैय्या रज़ी अल्लाहु अन्हाः

उनकी शादी अबु सलमा रज़ी अल्लाहु अन्हु से हुई थी। उन से जब शादी हुई तो उन से कई बच्चे हुए, परन्तु अबु सलमा की जुमादल आख़िर ४ हिजरी में मृत्यु हो गयी। उम्म सलमा एक महान न्यायशात्री और अपने समय की बहुत बुद्धिमान महिलाओं में से एक थीं। ८४ वर्ष की आयु, ५९ हिज्री में उनकी मृत्यु हो गयी (कुछ लोग उनकी मृत्यु ६२ हिजरी में बताते हैं) वह बक़ी में दफ़नाई गयीं।

7. जैनब बिन्त जह्श बिन रिक़ाब रज़ी अल्लाहु अन्हाः

वह पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की फूफी उमेमा बिन्त अब्दुल मुत्तलिब की पुत्री थीं। पहले उनका विवाह ज़ैद बिन हारिसा रज़ी अल्लाहु अन्हु से हुआ था, परन्तु दोनों में कुछ समस्याएं हुईं, और ज़ैद ने उन को तलाक़ दे दिया। ज़ैद को पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपना बेटा बना लिया था, और अरब के प्राचीन रीति के अनुसार अपनाए गये पुत्र की पूर्व पत्नी से विवाह करना नाजायज़ था। अल्लाह ने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ज़ैनब से विवाह का आदेश यह दिखाने के लिए दिया कि अरब की यह प्राचीन रीति समाप्त कर दी गयी है। यह शादी जुलहिज्जा ५ हिजरी में हुई। (दूसरे स्रोत के अनुसार विवाह ४ हिजरी में हुआ।) उनकी मृत्यु २० हिजरी में ५३ वर्ष की आयु में हुई और पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद उनकी जीवित पत्नियों में मरने वाली प्रथम पत्नी थी। हज़रत उमर ने उनकी जनाज़ा पढ़ाई और वह बक़ी में दफ़नाई गयीं।

8. जुवैरिया बिन्ते अल–हारिस रज़ी अल्लाहु अन्हाः

शाबान सन ५ या ६ हिजरी में बनू अल मुस्तिलक की लड़ाई में एक क़ैदी के रूप में लाई गयी थीं, और साबित बिन्ते क़ैस के हिस्से में दी गयी थी। कुछ निश्चित रक़म देकर आप ने उन को आज़ाद करने का निर्णय किया। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने साबित रज़ी अल्लाहु अन्हु को वह रक़म दे दिया जो उन्होंने मांगा था, आप ने उन को आज़ाद कर दिया और उन से विवाह कर लिया। यह देख कर मुसलमानों ने बनु अल मुस्तिलक़ के एक सौ परिवारों को यह कह कर आज़ाद कर दिया कि यह सभी पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ससुराल वाले हैं। इस प्रकार वह अपने लोगों के लिए एक रहमत साबित हुई। उन की मृत्यु ६५ वर्ष की आयु में, रबिउल अव्वल ५४ हिजरी में हुई।

9. उम्मे हबीबा, या रमला बिन्ते अबी सुफ़यान रज़ी अल्लाहु अन्हाः

वह उम्मे हबीबा (हबीब की माँ) के नाम से अपनी एक पुत्री हबीबा के कारण, जानी जाती थीं। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विरोधी, अबू सुफ़यान, की पुत्री होने के कारण उन्होंने ईमान के लिए बहुत सा बलिदान दिया, और अपने पति उबैदुल्लाह बिन जहश के साथ अबी सीनीया (हबशा) हिजरत कर गयीं। बाद में उबैदुल्लाह ने ईसाई धर्म स्वीकार कर लिया और मर गया, परन्तु उम्म हबीबा ईमान पर क़ायम रहीं और मज़बूती से जमी रहीं। जब पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपना एक दूत, अम्र बिन उमैय्या ज़मरी को अबी सीनीया के राजा के पास भेजा, तो उन्होंने भी विधवा

हबीबा का पैग़ाम आप के पास भेजा। राजा ने उनका विवाह पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ४०० दिनार महर के बदले में कर दिया, और उनको शुरहबील बिन हसनह की रक्षा में पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास भेज दिया। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ख़ैबर से लौटने के बाद, आप ने उम्मे हबीबा से सफ़र या रबीउल अव्वल सन ७ हिजरी में विवाह किया। उनकी मृत्यु ४२ या ४४ हिजरी में हुई।

10. सफ़ीया बिन्ते हुईय्य बिन अख़तब रज़ी अल्लाहु अन्हाः

वह बनू नज़ीर के यहूदी क़बीला के सरदार की पुत्री और पैग़म्बर हारून की वंशज थी। वह ख़ैबर में क़ैदी के रूप में लायी गयी, और अपने स्थान के कारण उन्हें पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दे दिया गया। आप ने उन्हें इस्लाम क़बूल करने के लिए कहा और उन्होंने ऐसा किया। आप ने तब उन्हें आज़ाद कर दियाऔर उन से सन ७ हिजरी में ख़ैबर की फ़तह के अवसर पर शादी कर ली। उनकी मृत्यु की तिथि कई ३६,५० या ५२ हिजरी में बताई जाती है। उन्हें भी बक़ी में दफ़नाया गया था।

11. मैमूना बिन्ते हारिस हिलालिया रज़ी अल्लाहु अन्हाः

वह अब्बास की पत्नी, उम्मे अल-फज़ल लबाबा अल-कुबरा बिन्त हारिस हिलालिया की बहन थी। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन से ज़ुलक़ादा सन ७ हिजरी में विवाह किया। वह पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दुल्हन के रूप में सरफ़ मक्का से नौ

मील बाहर, के मक़ाम पर आईं। उनकी मृत्यु भी सफ़र ही में ३८, ६१ या ६२ हिजरी में हुई और वहीं दफ़नायी गयीं। उनकी क़ब्र आज भी जानी जाती है।

इन महिलाओं से पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का विवाह हुआ था, इस में कोई प्रश्न नहीं है। फिर भी, कुछ विद्वान रेहाना बिन्ते ज़ैद की सामाजिक स्थिति के बारे में असहमत हैं, कुछ लोग कहते हैं कि वह पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पत्नी मुहर्रम ६ हिजरी में हुई थी। वह बनू नज़ीर से थी और बनू कुरैज़ा के एक आदमी की पत्नी थी। उन्हें बनू कुरैज़ा के खिलाफ़ एक लड़ाई में गिरफ़्तार किया गया था और पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन को अपने लिए चुना था। यह भी कहा जाता है कि आप ने उन को आज़ाद नहीं किया और उन्हें अपने पास एक लौन्डी के रूप में ही रखा। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अलविदाई हज से लौटने के क्रम में उनकी मृत्यु हो गयी और आप ने उन्हें बक़ी में दफ़ना दिया।

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास एक और लौन्डी थी जिन का नाम मारिया क़िबतिया था, जो आप को मुकौकिस के द्वारा पेश किया गया था। इन से पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को एक पुत्र इब्राहीम हुआ। मारिया रज़ी अल्लाहु अन्हा की मृत्यु १५ या १६ हिजरी में हुई और बक़ी में दफ़नायी गयीं।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बच्चेः

आप के सात बच्चे थे। इब्राहीम को छोड़ कर सभी का जन्म हज़रत खदीजा रज़ी अल्लाहु अन्हा से हुआ था। नीचे पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बच्चों की मुख़्तसर तफ़सील पेश है:

१. **क़ासिम:** वह पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सबसे बड़े पुत्र थे, और इसीलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम "अबुल क़ासिम" (क़ासिम के पिता) के नाम वे पुकारे जाते थे। जब वह दो वर्ष के थे कि उन की मृत्यु हो गयी।

२. **ज़ैनब:** वह पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सबसे बड़ी पुत्री थीं। वह क़ासिम के बाद पैदा हुई थीं, और शादी अबुल आस बिन रबीआ, उनकी ख़ाला हलाला बिन्ते खुवैलिद, से हुई थी। ज़ैनब को एक लड़का अली था और एक लड़की, उमामा; थी जिनको पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नमाज़ में गोद लिया करते थे, ज़ैनब की मृत्यु मदीना में सन ८ हिजरी के शुरू में हुई थी।

३. **रूकैय्या:** इनका विवाह उस्मान बिन अफ्फ़ान रज़ी अल्लाहु अन्हु से हुआ था, इन्हें एक लड़का, अब्दुल्लाह, हुआ, जिनकी मृत्यु छः वर्ष की आयु में तब हुई जब एक मुर्गे ने उन के आंख को खोद डाला। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बद्र की लड़ाई में थे जब रूकैय्या का देहान्त हो गया। जब ज़ैद बिन हारिसा मदीना बद्र की जीत का समाचार लेकर पहुंचे उस से पहले ही रूकैय्या को दफ़ना दिया गया था।

४. उम्मे कुलसूम: रूक़य्या की मृत्यु के पश्चात, पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बद्र से वापस हुए और उम्मे कुलसूम को उस्मान बिन अफ्फ़ान रज़ी अल्लाहु अन्हु के निकाह में दे दिया। उन्हें कोई बच्चा न था, उनकी मृत्यु ९ हिजरी में हुई, और बक़ी में दफ़न की गयीं।

५. फ़ातिमा: वह पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सबसे छोटी पुत्री थीं, जिनका विवाह अली बिन अबू तालिब रज़ी अल्लाहु अन्हु से बद्र की लड़ाई के बाद हुआ था। उन्होंने दो लड़के, हसन और हुसैन, और दो पुत्री, ज़ैनब और उम्मे कुलसूम, को जन्म दिया। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मृत्यु के छः महीने बाद, फ़ातिमा रज़ी अल्लाहु अन्हा का देहान्त हो गया।

ऊपर लिखित सभी पांचों बच्चे पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अल्लाह के रसूल होने से पहले पैदा हुए थे।

६. अब्दुल्लाह: इस में थोड़ा विचारों का मतभेद है कि अब्दुल्लाह का जन्म इस्लाम के आने से पहले है या बाद है। वह पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ख़दीजा से अंतिम पुत्र थे और बचपन में ही मर गये।

७. इब्राहीम: इब्राहीम का जन्म मदीना में जुमादल अव्वल या जुमादल आख़िर सन ९ हिजरी में हुआ। उनकी माता पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की लौन्डी मारिया किबातिया थीं। उनकी मृत्यु २९ शौव्वाल १० हिजरी को हुई।

पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सम्बन्ध में दूसरों ने क्या कहा?

जार्ज बर्नार्ड शॉ ने कहा:

"उन को मानवता के बचाने वाले के नाम से पुकारा जाना चाहिए। मेरा पूरा विश्वास है कि यदि उन जैसे व्यक्ति वर्तमान युग का डिक्टेटर बन जाए तो वह दुनिया की समस्याओं के समाधान करने में सफ़ल हो जाए इस प्रकार कि वह अति आवश्यक शांति और खुशहाली ला दें।

(The Genuine Islam, Singapore, vol. I, No. 8, 1936)

लैमैरटीन, विख्यात इतिहास लिखने वाले कहते हैं:

"यदि उद्देश्य की महानता साधन की सीमितता और आश्चर्यजनक परिणाम मानव की बेमिसाल बुद्धि के तीन सिद्धांन्त हैं, तो कौन है जो किसी महान व्यक्ति को इस आधुनिक युग में उनकी तुलना मुहम्मद से करने का साहस कर सके? अत्यन्त प्रसिद्ध मनुष्य ने केवल हथियार, विधि और साम्राज्य पैदा किया। यदि उन लोगों ने बहुत किया, तो इस से अधिक कुछ नहीं कि उन लोगों ने दुनिया में शक्ति की स्थापना की जो प्रायः उनकी आँखों के सामने ही टुकड़े-टुकड़े हो गये। परन्तु इस व्यक्ति ने न केवल सैन्यों, साम्राज्यों, लोगों और राजवंशों को ही नहीं बदला बल्कि उस समय आबाद दुनिया के एक तिहाई लाखों लोगों को बदल दिया; और उस

से अधिक उन्होंने बलि स्थलों, देवी देवताओं, धर्मों, विचारों, विश्वासों और आत्माओं को बदल दिया......... उनकी जीत में धैर्य रखना, उनकी लालसा, जो पूरे तौर पर एक विचार के लिए समर्पित थी और ऐसे तीरीक़े से भी नहीं कि वह एक के लिए झगड़ा हो, उनकी न समाप्त होने वाली प्रार्थनायें, उनका अल्लाह से गुप्त विचार-विमर्श, उनकी मृत्यु और उनकी मृत्यु पर कामयाबी, यह सभी बातें एक धोका प्रमाणित नहीं करती हैं बल्कि एक मज़बूत इरादे को प्रमाणित करती हैं जिन्होंने उनको एक धर्म मत की दोबारा स्थापना करने में शक्ति प्रदान की। यह धर्म मत दोगुना था, ईश्वर की एकता और ईश्वर की अशरीरता; पहली चीज़ यह बता रही है कि ईश्वर क्या है? दूसरी यह बता रही है कि ईश्वर क्या नहीं है; पहला झूठे खुदाओं को तलवार से पूर्ण रूप से हटा रहा है, तो दूसरा एक विचार को शब्दों के सहारे आरम्भ कर रहा है।

दार्शनिक, सार्वजनिक व्याख्यान देने वाले, क़ानून निर्माण करने वाले, युद्ध करने वाले, विचारों के जीतने वाले, उचित धर्म मतों को पुन: स्थापित करने वाले, बीस सांसारिक साम्राज्य और एक आध्यात्मिक साम्राज्य की स्थापना करने वाले, वह मुहम्मद हैं। सम्मान के साथ सभी वह सिद्धांन्त जिन के द्वारा मानव की महानता को मापा जा सकता है, हम प्रश्न कर सकते हैं, कि क्या उन से भी महान कोई है?

(Lamatarine, Histoire de la Turquie, Paris, 1854, Vol. II, P. 276-277)

माइकल एच.एच.हार्ट कहते हैं:

"विश्व के अति प्रभावशाली व्यक्तियों की सूची में मेरा उन्हें सब से पहला स्थान देना कुछ पाठकों को आश्चर्य में डाल सकता है, और कुछ दूसरों के द्वारा प्रश्न किया जा सकता है, परन्तु वह इतिहास में एक मात्र व्यक्ति थे जो दूसरों के द्वारा प्रशंसा किए गये, बल्कि वह इतिहास के एक मात्र आदमी थे जो धर्मनिरपेक्ष और धार्मिक दोनों सतह पर सब से अधिक सफल थे।

(M.H. Hart, "The 100: A Ranking of The Most Influential Person in History", New York, 1978, P.33)

नतीजा

पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चरित्र (अख़लाक़), उनके मिशन और सफ़लता, और पूरी मानवता (इंसानियत) के लिए उनके महत्व को पूरी तरह से बताना असंभव है। निश्चित रूप से वह बहुत ऊँची कोटी के चरित्र वाले थे। इस खण्ड में उन के चरित्र के महत्वपूर्ण और प्रभावशाली पहलुओं की मात्रा एक छोटा विवरण है। यह वर्णन वास्तव में एक हलकी समीक्षा या हलके विवरण से अधिक नहीं है।

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के द्वारा लोगों के पास इस लिए भेजे गये थे ताकि आप उन को उस धर्म की ओर मार्गदर्शन करें जिस को अल्लाह ने उन के लिए चुन लिया है। लगभग अल्लाह के सभी पैग़म्बरों ने उस मिशन को पुरा करने में अत्यन्त कठिनाईयां उठाई हैं जो उन को दिया गया था। यही स्थिति मुहम्मद

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ थी। उन्होंने एक अल्लाह की ओर बुलाने के मार्ग में कई कठिनाईयों का सामना किया। लोगों के प्रति आप का स्नेह, प्रेम, दया और सहानुभूति और उनका सभी चीज़ों के प्रति न्याय ऐसी खूबियां हैं जिनकी बार-बार चर्चा की जानी चाहिए ताकि इन्हें पुन: कहा जाये जब कभी पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की चर्चा की जाये।

मैं अल्लाह तआला से दुआ करता हूँ कि वह इस छोटे से काम को क़बूल कर ले और उच्च उद्देश्य में मेरी ग़लतियों को माफ़ कर दे। और मैं दुआ करता हूं कि अल्लाह अपनी दया पैग़म्बर, आप के परिवार, और आप के अच्छे नेक साथियों पर करे। अल्लाह क़यामत के दिन पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निकट हमें भी स्थान दे। आमीन!

• • •